लेखकक परिचय :

श्री सुशील चन्द्र झा

(प्रख्यात : सुशील)

ग्राम एवं पोस्ट - दुलहा, जिला - मधुबनी

जन्म : 6 जनवरी, 1942

माता : स्व. गोदावरी देवी

पिता : स्व. सच्चिदानन्द झा

जीवन यापन : साहू जैन कं. लि. कोलकाताक बजबज शाखा मे 2004 तक कार्यरत।

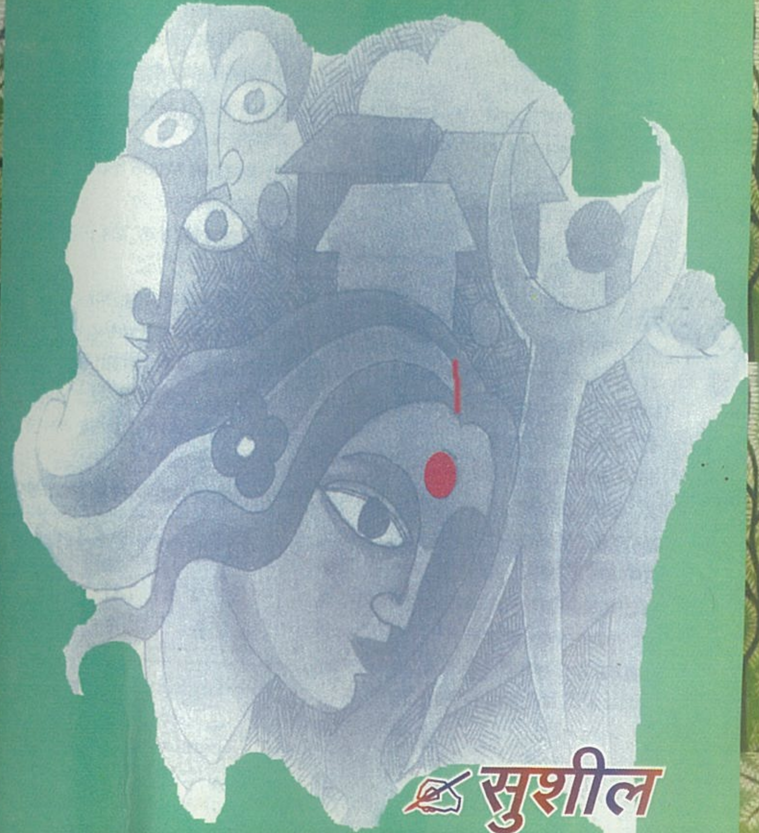
गतिविधि : एहि सऽ पूर्व `घराड़ी` आ `गामवाली` उपन्यास तथा कतिपय कथा आ एक आध आलेख विभिन्न पत्रिका मे प्रकाशित।

`मैथिली मुक्तिमोर्चा`क तत्त्वावधान मे 1980 मे बिहार सरकार द्वारा उर्दूकें राज्यभाषा बनयबाक विरोध मे पटना मे दिसम्बर, 1980 मे जन समूहक संग प्रदर्शन मे विशिष्ट भूमिका आ लाठी चार्ज मे ओधबाध। संप्रति मैथिली साहित्यक सेवा मे सहयोग।

वर्तमान पता : गवर्नमेंट कॉलोनी, ब्लॉक - ओ, प्लॉट-3, सुभाष उद्यान मोड़, बजबज, कोलकाता - 700137

Print & Design by : Lakhanpati Jha - 9748120990, 9883072050

भामती



सुशील

भामती

(मौलिक नाटक)

प्रणेता : सुशील

भामती नाटकक

पहिल खेप : पाँच सय प्रति

विक्रय मूल्य : 225 टाका एक प्रति।

प्रकाशक :

मैथिल स्वजन संघ

बनानी नगर, डाकघर, कोलकाता - 700 041

अध्यक्ष : **श्री जुगल किशोर झा**

मुद्रक :

श्री लखनपति झा

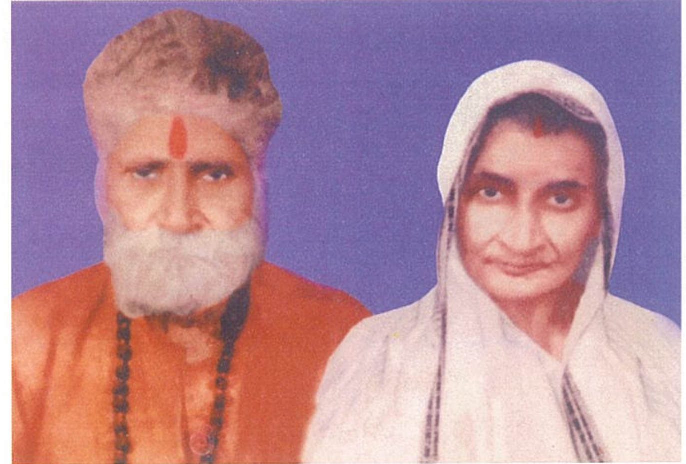
69, बड़तल्ला स्ट्रीट, तीन तल्ला

बड़ाबजार, कोलकाता - 700007

मो. : 9748120990, 9883072050

BHMATI a play in Maithili by **SUSHIL.**

श्री जुगल किशोर झा`, ग्राम एवं पोस्ट-महेशपुर, भाया-ताजपुर, जिला-समस्तीपुरक सौजन्य सँ अपन स्व. माय **सुवुधि देवी** एवं स्व. बाबू **पं. श्याम सुंदर झाक** स्मृति मे प्रकाशनार्थ राशि सहयोग।



पं. श्याम सुंदर झा एवं सुवुधि देवी

स्थानीय पता :

श्री जुगल किशोर झा

बनानी नगर, डाकघर

महेशतल्ला

कोलकाता - 700141

ग्राम श्रीखण्डी भिट्ठा, भाया सुरसंड, जिला- सीतामढ़ी (मिथिला), बिहारक निवासी स्व. नानाश्री ज्योतिषाचार्य **ब्रजभूषण झाकें** स्मरण करैत समर्पित ई एकटा श्रद्धा सुमन :-

सुशील

एहि `भामती` नाटकक मादे

संस्कृत साहित्याकांश मे तीन गोट म.म. वाचस्पति भ` गेल छथि। भामती ठाढ़ी गाम निवासी वृद्धवाचस्पति मिश्रक पत्नी छलीह। प्रसिद्ध शंकर भाष्यक टीका `भामती` हिनके नाओं पर अछि। बृद्ध वाचस्पतिक आर ग्रंथ सभ छनि। मुदा, सभसँ बेसी प्रख्याति अही ग्रंथ पर भेटल छनि। ठाढ़ी गामक मिसराइन पोखरि आ समीपस्थ भामा गाम, भामतीयेक नाओं पर अछि।

`भामती` नाटक जनाश्रुत कथा पर आधारित अछि। ध्यातव्य जे जनश्रुत कथा मात्र भामतीक तपस्या आ चरित्र तक सीमित अछि जे समस्त भारत मे छिड़िआएल अछि। भामतीक चरित्र एवं त्याग कें संस्कृत-विद्वान लोकनि बिसरिये गेल जकाँ छथि। प्रायः हुनका लोकनि कें भामतीक चरित्र असंगत लगलनि आ लागि रहल छनि। हुनका लोकनि कें तऽ मात्र भामती `टीका सँ प्रयोजन रहल छनि। मुदा, लोक श्रद्धा आ इमानदारीक संग दंतकथा रूप मे जीवंतता प्रदान करैत आबि रहल अछि। नहितऽ भामती शंकर-भाष्यक टीका `भामती` तक नाओं मात्र लेल सीमित रहि गेल रहितथि जाहि सँ लोक कें लेना-देना नहि छइ। लोक तऽ अपना भामती कें, नारीत्व कें, मायक ममता कें चिन्हैत अछि। जन-साधारण तऽ ओतबे बुझैत अछि जतेक ओकर छइ। भामती, अर्थात् मिथिलाक नारि। मिथिलाक नारिक माने भेल एकटा एहेन प्रकाशकीय अभा जाहि आलोक मे संपूर्ण भारतीय नारीत्व प्रकाशित अछि, नहि तऽ सुदूर द.भारत, महाराष्ट्र आ गुजरात मे एकटा आदर्श नारिक रूप मे कियेक मानल जइतथि? ओ कोन नैतिकता छइ? ओ नैतिकता छइ भारतीय नारिक अस्मिता जे पुरुष कें जन्म दैछ, ओकर संरक्षण आ संवर्द्धन मे अपन सभकिछु उत्सर्ग क` दैछ। मुदा, हाय रे पुरुष! ओहि नारि कें मात्र पुतुल बनाक` राखैछ, कठपुतली जकाँ इच्छानुसार नचबैत अछि। जौं भामती मात्र खेलौना बनिक रहल रहतथि तऽ अतेक सशक्त आ अमरकथा लोककंठ मे आइतक बांचल नहि रहैत। की ई स्वयं मे एकटा इतिहास नहि अछि? एहि सत्य कें कोन आधार पर नकारल जा सकैछ?

एहेन ऐतिहासिकता कें स्वीकार करब साहित्यिक धर्म छइ। एहन साहित्यिक कृति लेल मात्र लिखित इतिहास आ कोनो एकेटा स्थल सर्वेसर्वा माने नहि रखैछ। एकर सामग्री इतिहास आ सभसँ बेसी समाज मे छिड़िआएल भग्नावशेषक उपलब्धि विशेष महत्व रखैछ जकरा यथार्थ कल्पनाक सहारा द` एकटा नियामक आ विश्वसनीय रूप देल जाइछ। इएह त` होइथ साहित्यक जीवंत शिल्प।

जौं भामतीक चरित्र मनगढ़ अछि तऽ लोक एकरा नकारि किये ने दैछ? भामती हमर, भामती मिथिलाक, भामती भारतक आ संपूर्ण नारीत्वक पर्याय, से की मात्र `भामती` भाषा-टीका ग्रंथ ल`क`? जौं सएह सत्य तऽ जनश्रुत कथा मे एहि ग्रंथक विषय-वस्तु लोप

कियेक अछि? स्वयं वाचस्पति गौंण कियेक छथि? साहित्य एत` एकटा सांस्कृतिक सूत्रधारक रूप मे ठाढ़ होइछ। स्वयं शंकराचार्य कें मिथिला मे परास्त होब` पड़ल रहनि, आ वाचस्पति अपने घर मे, अपने स्त्री सँ परास्त होइ छथि। एकोहं द्वितीयो नास्तिकं धारणा निर्मूल होइछ। शक्ति बिना शिव शव छथि, से धारणा आर सशक्त होइछ। मिथिला शक्तिपीठ अछि ताहू मे संदेह? स्त्री शक्तिस्वरूपा होइछ तकर प्रमाण की ताक` पड़त?

सर्वप्रथम भामती कथा सँ परिचय नेनपन मे नानाश्री स्व. ज्योत्षाचार्य ब्रजभूषण झा द्वारा भेल छल। तकराबाद शिक्षा-दीक्षा, बिआह-दान, जीवन-यापन मे समय ससरैत गेल। एहि मध्य हमर दूटा उपन्यास आ किछु कथा आबि गेल छल। संयोगवश अवकाशप्राप्त हेड मास्टर स्व. जे.एन. मल्लिक सँ संपर्क भेल। ओहो भामतीक जनश्रुत कथा सुनओलनि आ हुनका पर लिख` लेल आग्रह कयलनि। आ हम उपन्यास लिखब आरंभ कयलहुँ। ताहि मध्य एकटा गुजराती वालाक प्रवचन सुनबाक अवसर हमरा पत्नी कें भेटलनि। ओ बहुत तर्क-वितर्कक आधार पर नाटक लिखबाक दिस प्रेरित कर` लगलीह। हमरो मोन मानि गेल, मुदा से दुरूह काज छल। तथापि किछु हिंदी-मराठी आ वांग्लाक नाटकक पुनः अध्ययनक वाद नाटक लिखब आरंभ कएल। नाटक संपूर्ण भेला पर श्रद्धेय स्व. डा. दुर्गानाथ झा `श्रीश` कें देलियनि संशोधन लेल।

हुनक आशीर्वाद आ आमूल्य सुझाव भेटल। एकटा अमूल्य सुझाव ओ देलनि जे सदति हमरा (सुशील) मोन मे राखबाक अछि जे नाटक एकटा सशक्त साहित्यिक विधा छइ जकर अवहेलना नहि होयबाक चाही। श्रद्धेय राजमोहन झा सेहो `भंगिमा` पत्रिका मे, जाहि अंक मे `भामती` नाटक संपूर्ण रूप मे छपल अछि, नाटकक साहित्यकताक उल्लेख कयने छथि। नाटक सर्वप्रथम साहित्यिक विधा अछि से कह` नहि पड़त। नाटक मंचन तऽ निर्देशकक क्षमता पर निर्भर करैत छइ जे ओ कोना आ कोन तरहें मंचन करैत अछि। तकरावाद पाण्डुलिपि श्रीमती प्रेमलता मिश्र `प्रेम` आ श्री छत्रानंद सिंह झा उर्प बटुक भाइ कें देलियनि। ओ लोकनि हतोत्साह नहि कयलनि। ओही साल, अंतर्राष्ट्रीय मैथिली नाटक प्रतियोगिता मे `भंगिमा` ई नाटक ल` क` उपस्थित भेल आ `भामती` पुरस्कृत भेलै।

नाटक देखलाक बाद आदरणीय स्व. उपेन्द्र नाथ झा `व्यास` हमरा सँ भेंट करबाक इच्छा प्रकट कयने रहथि। हुनका डेरा पर गेल रही। पहिल घंटाभरि मे तऽ पान आ चाहक सुआदक संग मिश्रित हुनकर धक्का-पर-धक्का हमरा विचलित क` देने रहय। जखन विदा होब` लेल आज्ञा मंगलियनि तऽ हाथ पकड़िक` बैसा लेने रहथि, आ कह` लागल रहथि - `बैसने। कोन धड़फड़ी छइ? आइ कलकत्ता जेबाक छौहे नञि, तहन फेर....। अन्हरिया पक्ष तऽ कहबे केलियौ।

आब तों अपना इजोरिया पक्षक मादे सुन। तों तऽ हमरा संस्कृत विद्वान सभक नाक मे कौड़ी बान्हि देलएँ। तोरा संग-संग प्रेमलता आ बटुक भाइ कें सेहो आशीर्वाद दइ छियनि। हम तऽ आग्रह करबनि पुनः `**भामती**`क मंचन कर` लेल।`

तकराबाद गुरू-शिष्यवत परिवेश मे बहुतरास गप्प भेलै। परिणाम देखबा मे आबि गेल जखन `भामती`क मंचन `भंगिमा` पुनः दू बेर कयलक। हिन्दीक प्रख्यात नाटककार ~~जावेद~~ प्रकाश अख्तर सेहो भेंट करबाक समाद पठेने रहथि। मुदा, हमर दू बेरक प्रयास असफल रहल। दुनू बेर ओ पटना सँ बाहर रहथि।

अंत मे अतेक कहब आवश्यक बुझना जाइछ जे सरल भाषा खासक` संभाषणक शब्द चयन मे जनसाधारणक ग्राह्यता पर सदति हमर धेआन छल। ओना किछु बंधुक संकेत छलनि मोहन राकेशक `आषाढ़ के एक दिन` दिस। किंतु हमरा मोन मे बैस गेल छल जनसाधारणक मुँह-कंठ मे रचल-बसल `भामती` कथाक भाषा। जे किछु, मात्र लोकक भावनाक आदरक संग अपन हार्दिक उत्कर्ष ल` अपने लोकनिक समक्ष उपस्थित छी। नाटकक मंचन देखनहि संपूर्ण रसक अनुभव भ` सकैछ। विटंडीपनाक अतिशयवश कथाक प्रमाणिकताक कसौटी नहियों भेने ग्राह्यता मे अपनत्वक अनुभव सद्यः होएत, से हमरा विश्वास अछि। मुदा ई निर्भर करैत अछि निर्देशक आ पात्र लोकनिक नाटकीयता पर। अपन वस्तुकें नहि

चिन्हब अपन अधिकार नहि बूझब मैथिलक सोभाव सन होइ छइ। नहि तऽ विद्यापति कें बंगाल कियेक अपना लेने रहैत? अपने पैर मे कुरहरि माड़ब मैथिले जनैत अछि। एहि सँ कालिदास कें मैथिल होयबाक एकटा आर प्रमाण भेटैत अछि। मुदा, हमरा लोकनि लेल धनिसन।

एहि नाटकक प्रकाशन मे **श्री जुगल किशोर झाजी**क सहयोग एवं **श्री लखनपति झा**क मनोयोग भेटब हमरा लेल एकटा सशक्त संबल रूप मे भेटल अछि, तकर सराहना शब्द मे कयनाइ असंभव अछि। संग-संग `**मैथिल स्वजन संघ**`क सदस्य लोकनिक सहृदयता त` हमरा संग अछिये।

बस, तत्काल एतबे।

- सुशील

अक्षय तृतीया
13-05-2013
बजबज, कोलकाता।

पात्र

भामती	-	वाचस्पतिक स्त्री।
वाचस्पति	-	भामतीक पति आ ग्रंथकार।
शाम्भवी	-	भामतीक नैहरक सखी।
पुरंदर	-	भामतीक सहपाठी आ सासुरक ग्रामवासी।
सौमित्र	-	भामतीक नैहरक समदिया।
वैद्य	-	गामक एकटा बृद्ध।
प्रहरी	-	राजक सिपाही।
अनचुर प्रहरी	-	राजक सिपाही।
नेना 1 (पहिल अंक)	-	शाम्भवीक पुत्र 1
नेना 2 (दोसर अंक)	-	शाम्भवीक पुत्र 2
दूत	-	राजाक सिपाही

पहिल मंचन	:	7 अक्टूबर, 1991
स्थान	:	विद्यापति भवन, पटना
दोसर एवं तोसर मंचन	:	28, 29 अप्रैल, 1993
स्थान	:	विद्यापति भवन, पटना

पहिल अंक

वाचस्पतिक माय-बाबूक मृत्यूपरान्त
`भामतीक पचीसम-छब्बीसम बर्खक आसपास

मंच सज्जा :-

एकटा टटौ घर। लेबल-चिक्कनि माटिसँ ढेउरल आ लिखिया-पढ़िया कएल। सामनेक मुँह ओसारा पर खुजैत, दोसर मुँह दोसर घरसँ संबंध स्थापित करैत। दुनू मुँहपर दुनू कात पुरइनिक पात अंकित। मिलाजुला कऽ रुचिपूर्ण।

सामनेक मुँह ल`गसँ एकदिस कोन्ह तक बाँसक अरगनी जाहिपर एक-दू टा नूआ राखल।

कोन्हपर छाता आ बेंत संग-संग झुलैत। तकरे बगलमे मिरजइ आ डोपटा चौपेतल राखल। बुझना जाइछ एकर सभक उपयोग बहुत दिनसँ नहि भेल अछि।

मंचक दोसर भागमे एकटा साधारण सज्जित चौकी एकर प्रयोग कखनो कऽ मात्र क्षणभरि लेल, बैसऽ लेल होइछ।

चौकीसँ कने हटिकऽ एकटा पटिया ओछाएल। ई भामतीक व्यक्तिगत प्रयोगमे अबै छनि।

वस्त्र सज्जा :-

भामती ललपढ़िया नूआ आ लाल आँगीमे। कपार पर लाल ठोप आ माँग सिन्नुरसँ भरल। केशक खोपा बान्हल। भरि हाथ लाल-पियार लहठी। नाकमे उज्जर ठोप। कानमे कनैली।

भामती अपन पूर्ण यौवनमे।

दृश्य : -

चिड़ै-चुनमुन्नीक शब्दक संग-संग मंचपर इजोत पसरैत अछि। भामतीकें पटियापर सूतल देखल जा रहल अछि।

चिड़ै सभक समवेत शब्द तीव्र होइछ। भामतीक निन्न टुटै छनि। बैसिकऽ हाथ पसारि `कराग्रे बसति लक्ष्मी...`पढ़इ छथि। बैसले-बैसले टाटपर अंकित भगवतीक चित्रकें प्रणाम करइ छथि। पृथ्वीकें प्रणाम् करबाक मंत्र `समुद्र बसने देवि..` पढ़ि `प्रातः स्मरामि भवभीति महार्त्त शांतैः नारायण गरुड़वाहन मज्जनाभम..पढ़ैत उठि जाइ छथि। श्लोक पढैत बाहर जाइ छथि।

चिड़ै आ श्लोकक समवेत स्वर सुनबामे अबैछ। आस्ते-आस्ते स्वर शेष होइछ। भामती दोसर घर`क मुँह दऽ प्रवेश करइ छथि। चौकी त`रसँ बाढ़नि लऽ ई घर बहारैत दोसर घरमे प्रवेश करइ छथि।

आँचरसँ मुँह-हाथ पोछैत सामनेक मुँह दऽ प्रवेश करइ छथि। कोइलीक मद्धिम शब्द गोचर होइछ। शब्द सुनि क्षणभरि भामती ठाढ़ि रहइ छथि। हाथ बान्हि आस्ते-आस्ते टहलैत मंचक कोन्हपर आबि टेक लगा गंभीर भऽ ठाढ़ि भऽ जाइ छथि।

कोइलीक शब्द बन्न भऽ जाइछ। भामती गंभीर मुद्रा मे पुनः आस्ते-आस्ते घर जाइ छथि। कोइलीक मद्धिम शब्द पुनः गोचर होइछ। भामती सूपमे किछु नेने प्रवेश करइ छथि, आ पएर लटका चौकीपर बैसि अकटा बीछऽ लगइ छथि।

कोइलीक शब्द तीव्र होइछ। सूप चौकीपर राखि भामती मंचक कोन्हपर पूर्ववत ठाढ़ि भऽ जाइ छथि।

भामती - तहूँ बड़ दुष्ट छएँ ! तोरा मात्र येह गाछ भेटइ छउ? आर कतेक एहिसँ बढ़ियाँ-बढ़ियाँ छत्तनार गाछ भेटतौ तोरा ! महु, आम, जामुन आ नहि जानि कतेक तरहक गाछ, फूलसँ महमह करैत भेटतौ। हम जेना तोहर खौझनिआ होइयौ, अरबद्धिकऽ अही गाछपर अबइ छएँ तों !

(चुपचाप टहलऽ लगइ छथि। कोइलीक शब्द अनामति)

..... **(तमतमाइत)** ठहर, अइ गाछकें काटिये दइ छिअइ। ने रहतइ बाँस, ने बजतइ बसुली।

(घरक मुँह तक जाइ छथि। अनायास ठमकि जाइ छथि। अख्यास करैत मंचक मध्य तक अबइ छथि।)

...***(स्वगत)*** एहिमे गाछक कोन दोष छइ ! एहेन कुबुद्धि किएक उपजल हमरा मोनमे! कहाँदन हिनके रोपल छनि ई दाड़िमक गाछ!

(कोइलीक मद्धिम शब्द गोचर अछि)

... *(कोइलीसँ)* हमरा जानल अछि जे वसंतक आगमन भऽ गेल छनि। आममे लागल मज्जर, किसलयसँ आच्छादित गाछ-बीरिछ, प्रस्फुटित पुष्पक महंक,

भ्रमरक गुनगुन हमरासँ चोराएल नहि अछि। हमरा सभटा अंगा गेल अछि। तोहर कोनो टा बस नहि चलतौ।

(कोइली चुप भऽ जाइछ)

...(उत्फुल भऽ टहलैत) बड़ बुधियार छें तों ! हमर कहल मानि गेलएँ। एतऽ नहि एने तोरापर बट्टा नहि लागि सकइ छउ ! डानियों एक घर बकसि दइ छइ ! (नजरि सूपपर जाइ छनि अंकटा-मिसिया बीछऽ लइ छथि। कोइलीक शब्द पुन; गोचर होइछ। भामतीक उत्फुल मुँह खसि पड़इ छनि)

...छएँ पिलुआ खायवला जीव, तऽ नीक बातक असरि कोना पड़तौ ! जेहेन करिलुठ छउ तोहर बगय, तेहने दुष्ट छउ तोहर मोन। मात्र एकटा बोलीपर तोरा अतेक गौरव छउ? से जे रहितें तों नीक, तँ अनका खोंतामे अण्डा किएक दीतएँ?

(कोइलीक शब्द अनामति अछि। भामती सूप राखि तमतमाइत उठइ छथि)

...ओह, एकर मोन तँ आर बढ़ले जाइ छइ !

(कोइलीकें उड़बऽ लेल किछु ताकइ छथि। किछु उठाकऽ उचकिकऽ ओकरापर (जेम्हर सँ शब्द अबैछ) फेकइ छथि। ओ 'किछु' अपनासँ पाछू दिस

फेका जाइ छनि)

(असहाय भेलि बकर-बकर तकइ छथि, हारलि सन मुँह नेने टहलऽ लगइ छथि)

...नहि, तोरा हम किछु नहि कहबउ ! एक जनमक फल तँ भोगि रहल छी। सभटा अछैत किछु नहि अछि हमरा !

(ठाढ़ि भऽ किछु सोचऽ लगइ छथि कि शाम्भवीक प्रवेश होइछ।)

शाम्भवी - *(प्रवेशक संग-संग)* एकर दोखे की छइ? ई तँ मात्र दूती अछि। नहि, सेहो नहि। ई तँ अपना जोड़ीकें ताकि रहलि अछि। अपन पंचमतान द्वारा ई अपन आगमनक सूचना अपना प्रेमीकें दऽ रहल अछि। भऽ सकैये, एकरो प्रेमी बिसरि ने गेल होइ एकरा। एकरा शब्दक माधुर्य छइ एकर अनुराग आ शब्दक टेसी छइ एकर प्रेम विह्वलता।

(शाम्भवी भामतीक लगमे आबि जाइ छथि, आ हुनका कान्हपर हाथ राखि कहइ छथिन्)

...एकर दर्द बेसी तोंहीं अंटकारि सकइ छहक। अरबिद्धिकऽ तें एतऽ अबैत अछि बेचारा !

भामती - नियामक छइ जे दुनूक संयोग भइये जेतइ? हमरे सन अभागलि जौं ईहो होअय?

(लगले जना अपना भूलक अंटकर लागि जाइ छनि, ठोरपर आङुर राखि लइ छथि)

...(आङुर हटा) नहि-नहि, ककरो बेजाय सोचबाक की औचित्य अछि ! हमरा सन भाग्य केकर छइ। एक-सँ-एक ग्रन्थक रचनाकार आ तनिकर पत्नी हम! जिनगीक अर्थ मात्र खाएब-पीब, ओढ़ब-पहिरब तँ नहि छइ !

शाम्भवी - हँ-हँ, ई तँ तोहर तपस्या छह। जाहि प्रेम मे त्याग नहि, उत्सर्गक भावना नहि से तँ भेलइ वासना।

(भामतीक नजरि सूपपर जाइ छनि।)

भामती - **(नूआक फेंट बन्हैत)** सभ काज पड़ले छइ! ***(ओहिना चौकीपरसँ सूप लऽ शाम्भवी ल`ग अबइ छथि कि कोइली पुनः बाजऽ लगैछ।)***

.... ओह, ई सरधुआ तँ अकच्छ कऽ देलक। अहिना कहियो-कहियो भोरे-भोर चलि अबइ छइ ! कोन सतबधि छइ से नहि जानि !

शाम्भवी - *(बाहर दिस उन्मुख होइत)* ठहरऽ, हम उड़ेने अबइ छी एकरा।

(शाम्भवी बाहर होइ छथि। हठात भामतीक मुँह चमकि उठइ छनि। शैशवावस्थाक क्रियाकलाप मोन पड़ि जाइ छनि। कोइलीक `कूऽ कूऽ`, अनुकरण

करऽ लगइ छथि। हुनकर एकलखति `कूऽकूऽ`पर कोइली चुप भऽ जाइछ।)

भामती - *(उत्फुल्ल आ गर्वोन्मुक्त)* कोढ़िया नहि तन रे! तहनसँ अकच्छ कयने छलाहे ! बुझहक आब !

शाम्भवी - **(धड़फड़ाएल प्रवेश करैत)** बाप रे ! रस्ता कातक धर छह तोहर ! हम ओकरा उड़बितौं कप्पार! तोहर `कूऽकूऽ` सुनि घुरि अयलहुँ अछि !

(भामतीकें ठकमूड़ी लागि जाइ छनि। स्थितिसँ उबारऽलेल शाम्भवी सूप सम्हारि हाथ पकड़ि लइ छथिन। भामती आँखि मूनि आ हाथ जोड़ि भगवतीक समक्ष ठाढ़ि भऽ जाइ छथि)

भामती - क्षमा करब हे माँ।

(एहि मध्य एक व्यक्ति घर`क मुँहपर ठाढ़ देखल जाइछ।)

शाम्भवी - *(उल्लसित आश्चर्य)* देखियौ ! अतेक भोरे कतऽ सँ हौ सौमित्र?

(भामतीक धेआन भग्न होइ छनि। ओ घर`क मुँह दिस घुरइ छथि।)

भामती - एना अछोप जकाँ किएक ठाढ़ छहक ओतऽ?

सौमित्र - **(प्रवेश करैत)** हय अपनो घरमे हर्र दऽ पैसबाक आदति नहि हय। घर तँ होइ हइ जनीजाति लेल।

भामती - सभदिन अइनियाहे रहि गेलहक तों। सखीक प्रश्नक उत्तर नहि देबहुन?

सौमित्र - राति डीह टोल रहियै। आबऽकाल काकी कहनहुँ रहथिन मिसरजी दऽ पता लगबऽ लेल। एलथिन तँ?

शाम्भवी - तहन बाते कोन छलै !

(तीनूक मुँह लटिक जाइ छनि। भामती चौकी तरसँ चटकुनी आनऽ जाइ छथि।)

...तों बैसकऽ ता सखीकें कुशलक्षेम कहुन। हम एखन घड़फड़ीमे छी। हुनका पाठशाला जयबाक छनि। *(जाइत-जाइत)* आर सब बढ़ियाँ तँ?

सौमित्र - हँ हय, सभटा चकाचक छइ।

शाम्भवी - *(मुँहपर जाकऽ) भागि ने जइहऽ। आ सुनऽ। भानस हमहीं जाइ छिय करऽ। (शाम्भवी बाहर होइ छथि।)*

सौमित्र - बुझहक। हम नियारैत रहियै जे जलखै क`कऽ बिदा भऽ जेबइ।

भामती - से कहूँ भेलैये ! बैसऽ ने। निचेनसँ गप्प हेतइ।

(भामती चौकीपरसँ सूप आनऽ जाइ छथि। सौमित्र निचेनसँ तौनीक खूटसँ तमाकुल खोलैत अछि। भामती सूप लऽ अपना आसन पर बइसइ छथि।)

सौमित्र - *(तमाकुल खोंटैत)* तऽ मिसर जीक कोनो खोज-खबरि नहि छनि?

भामती - *(सूपमे ध्यान देने)* राजक प्रहरी बरमहल अबैत रहइ छइ। दरबारी लोकनि आ स्वयं महाराजधिराजक अनुमान छनि जे ओ सुदूर दक्षिणक भ्रमणपर गेल छथि। (मूड़ी उठा) प्रायः शंकराचार्यक जन्मभूमिक दर्शन करए।

सौमित्र - संन्यासिये बनइके रहनि तँ बियाहे बेकार केलनि।

(मुँहपर राज प्रहरी ठाढ़ देखल जाइछ। ओ भामतीकें झुकिकऽ प्रणाम करैछ) -

प्रहरी - प्रणाम देवि !

भामती - *(उत्सुक)* कहू, कोन शुभ सनेस अनलहुँ अछि?

प्रहरी - हँ देवि। स्वनामधन्य राजपंडित सम्प्रति अपन गुरुदेव शंकराचार्यक जन्मस्थानक दर्शन हेतु निकलल छथि। तत्पश्चात् ओ हुनकर कर्मस्थल सभक दर्शन सेहो करताह। देवि ! ई सूचना अपन विश्वासी दूत द्वारा सुनि महाराज अन्न ग्रहण कऽ ओहि दिससँ चिन्तामुक्त भेलाह अछि, आ सत्वर अहाँक सूचनार्थ हमरा पठौलनि अछि। आइ समस्त राजमहक परिसर आनन्दोल्लासमे हिलकोर लऽ रहल अछि।

(प्रहरीक बात सुनि भामती खुशीक लहरिमे डूबि जाइ छथि। प्रहरी संकेत द्वारा नेपथ्यसँ ककरो बजबैत अछि। एकटा अनुचर प्रहरी वस्त्रासँ

झाँपल एकटा बड़का थार लऽ उपस्थित होइत अछि। मुख्य प्रहरी थारक किंचित भाग उघारि वस्त्रमे लपेटल किछु लैछ।)

देवि !

(भामती आँखि खोलै छथि।)

अहाँक इच्छाक प्रशंसा करैत महराजधिराज अहाँक महापंडित स्वामीक नवीनतम पाण्डुलिपिक प्रतिलिपि कराय पठौलनि अछि।

(भामती सत्वर उठिकऽ मुँह लग जाइ छथि। उल्लसितमना प्रतिलिपिकें करेजमे सटा आत्मविभोर भऽ जाइ छथि।)

... देवि !

(भामती आँखि खोलइ छथि।)

...(समूचा थार उघारि) महाराज आ महारानी, दुनू गोटे निवेदन कएलनि अछि एहि तुच्छ सेवाकें स्वीकार कऽ कृतार्थ करबा लेल।

भामती - सर्वगुण संपन्न महाराज आ महारानीक गुण सभक बखान करबाक सामर्थ हमरामे नहि अछि। तें अतेक कहबाक साहस हम अबस्स कऽ रहल छी जे मात्र पतिक वस्तु हम ग्रहण कऽ सकइ छी। ई बात हम पहिनहुँ कहि चुकल छी। हुनका अनुपस्थिति मे बिना हुनकर

अनुमतिक हम ई लेबऽसँ असमर्थ छी। हमरा दिससं दुनूकें निवेदन करबनि जे एकरा अवहेलना नहि बूझथि। हमर प्रणाम् कहबनि। संग-संग एहि प्रतिलिपि लेल हम हुनकर आंतिरक संवर्धना करैत छियनि। हमरा लेल एहिसँ बढ़िकऽ अमूल्य वस्तु एहि पृथ्वीपर किछु नहि अछि।

(क्षणभरि दुनू प्रहरी चुप भेल रहैछ। तत्पश्चात् भामतीकें प्रणाम् कऽ दुनू चलि दइछ। प्रतिलिपिकें देखबाक लोभसँ उत्प्रेरित भामती गेठरी खोलैत स्वस्थान दिस घुरइ छथि। सौमित्र उत्सुकवश ठाढ़ भऽ देखबाक प्रयास करैछ। दुनू गोटे अपना-अपना चटकुनीपर बइसइ छथि।)

सौमित्र - *(आनन्द मिश्रित उसाह मे)* हम तँ सुनिते छलौं जे महाराज आ महारानी मिसर जीकें पएर छूबि प्रणाम् करइ छनि ! आइ आँखिसँ प्रमाण देखो लेलौं !

(प्रतिलिपि देखैत-देखैत भामतीक आँखि डबडबा जाइ छनि।)

... तहूँ बड़े छतिफट्टू छहक। चलऽ हमरे संग गाम।

भामती - *(नोर पोछैत)* ई हमर खुशीक नोर अछि। कतेक तरहक आशंका मोनकें घेरने रहैत छल।

(शाम्भवी धड़फड़ाएल प्रवेश करइ छथि।)

शाम्भवी - राजप्रहरी आएल रहइ ने? कोनो नीक खबरि?

सौमित्र - *(ठोरमे तमाकुल राखि)* मिसरजीक पता लगलनि। भ्रमणपर छथि।

शाम्भवी - तोहर पएर बड़ शुभ छह हौ सौमित्र।

सौमित्र - हँ, यात्रा शुभ अछि हमर। तें हम आइये जयबा लेल नियारै छी। ओतहु सभकें चिन्ता लागल रहइ छनि।

शाम्भवी - से कोना हेतऽ? अच्छा, हम चलइ छी एखन।

(शाम्भवी बाहर होइ छथि)

सौमित्र - हम फेर कहइ छियह, चलऽ हमरे संग गाम। मिसर जीकें घूरऽमे बिलंब छनि।

भामती - अपना मोनक छनि। कोनो मुहुर्त्त आबि सकइ छथि। दोसर-तेसर छनिहों नहि जे घर देखतनि।

(सौमित्र थूक फेकऽ मूँहपर जाइछ। कनेसँ पुरन्दर बाँचि जाइछ। सौमित्र थकमका जाइछ।)

पुरन्दर - *(प्रवेश क` कऽ)* कने देख लेबाक चाहै छल मूड़ी नमड़ाकऽ !

(सौमित्र चुप्प रहैछ।)

भामती - हमरा गामक छथि। आइये अयलाह अछि।

पुरन्दर - *(मुस्किआइत)* सुआइत।

सौमित्र - हमरासँ तँ भूल भेबे कएल अछि। कने अहूँ तँ खकसिकऽ अबितौं।

(पुरन्दरक भृकुटि डेढ़ भऽ जाइछ)

...अपना घरमे आहाँ दू कौर बेसी खाएब, मुदा हम उचित कहलौंहें।

पुरन्दर - ई घर अपनसँ कम नहि अछि। बहीनक घर अछि ने !

सौमित्र - बहुत खुशीक बात। मुदा अपनो घरमे लोक खखसि कऽ जाइ हय।

(पुरन्दर पित्तकें दबा भामती दिस उन्मुख होइछ।)

पुरन्दर - आहाँ दिससँ तँ ने निषेध अछि?

भामती - घरमे पइसकऽ तँ अहीं कें एना पूछऽ अबैत अछि।

पुरन्दर - हम तँ एहि दुआरे पूछल अछि जे नैहरक लोकसँ गप्प करैत अछौंह नहि होइत हएत।

भामती - से एकदम स्वाभाविक बात कहलियै आहाँ।

पुरन्दर - गुलाबक थाला राखि देलहुँ अछि आँगनमे। रोपि दीतहुँ मुदा, आहाँक रोपल लगले कनोजरि छोड़ि दइ छइ।

(भामती चुप रहइ छथि)

... भाइक कोनो खोज-खबरि ? घरे वसेनाइ अनुचित भेलनि।

भामती - *(आन्तरिक पीड़ासँ उद्वेलित)* एना नहि बाजी ! हमरा सुखक बखान सरस्वतीयो नहि कऽ सकतीह। सम्प्रति दक्षिणक भ्रमण पर छथि।

(सौमित्र बाहर होइछ)

पुरन्दर - *(असमंजसमे)* हँ, से तँ सत्ते, से तँ सत्ते ! (वातकें मोड़ दैत) अच्छा, चटियाक संख्या बढ़ले हैत? हम चेष्टामे छी जी एकटा पाठशाला खोलि दी तत्काल।

भामती - से की?

पुरन्दर - बस, एकटा पाठशाला। जीवऽलेल एकटा नियामक उपाय।

भामती - *(कने गुम्म भऽ)* आहाँक विचार उत्तम अछि। मुदा, मात्र उत्तम भेने औचित्य प्रदान कएल जा सकइ छइ? जएह अछि, यथेष्ट अछि। बेसिये कहक चाही।

(सौमित्रक प्रवेश होइछ)

पुरन्दर - आश्चर्य लागि रहल अछि जे आहाँसन साकांक्ष नारि भविष्य निधिक प्रति अतेक उदासीन रह`त।

भामती - *(वाचस्पतिक ग्रन्थ दिस देखबैत)* हिनकर साधना हमर भविष्य निधि अछि।

पुरन्दर - छी तँ कहुना गुरुजीक कान्या। आहाँक बुद्धिक विलक्षणताक समक्ष हम सदति नतमस्तक रहइ छी।

(सौमित्रक प्रवेश)

भामती - जकरा आहाँ बुद्धिक विलक्षणता कहइ छिअइ, से हमर धर्म अछि। **(सौमित्र कें देखैत)** चिन्हलहुन हिनका?

सौमित्र - *(पुरन्दर कें ठिकियबैत)* चिन्हरगर लागि रहल छथि।

तैयो भटकि रहल छी।

भामती - बाबूक शिष्य ईहो छथि। कोनो ग्रन्थ सेहो लिखि रहल छथि।

पुरन्दर - *(गर्वित मुस्की दैत)* अच्छा, परिचय दैत रहिथनु।

(पुरन्दर बाहर जाय लगैछ।)

सौमित्र - सरकार ! अपनेक कला कें स्थान दऽ देल अछि।

(पुरन्दर बाहर जाय लगैछ)

विश्वास कएल जाय ! अपनेकें एखने मार्गपर भेटि जाएत ! अच्छा, कहल-सुनल माफ करबइ।

(मोन मसोसिकऽ पुरन्दर निकलि जाइछ।)

.....**(भामतीसँ)** जे किछु, मुदा संस्कार हिनकर तेहेन नहि छनि। सचेत रहब आहाँ।... धुर्त नहि तन !

(शाम्भवीक नेना आबिकऽ ठाढ़ भऽ जाइछ)

भामती - यैह, सिपाही आबि गेलऽ। *(मुस्किआइत नेनाकें देखैत)* की बात छइ बौआ?

नेना - *(सौमित्र दिस देखैत)* माय हिनका बजेलखिन्हें।

भामती - हिनका आहाँ चिन्हइ छियनि?

(नेना `नहि` मे मूड़ी डोलबैत अछि।)

...*(मुस्किआइत)* तहन हिनके कोना बजेलखिन्हें आहाँक माय?

(नेना लजा जाइछ।)

...*(सौमित्रसँ)* ओ मानऽवाली जीब नहि छथि। नहि जेबहक तँ एखने दौड़लि औथुन। एक तँ राकस दोसर नोतल।

(नेनाक संग सौमित्रक प्रस्थान होइछ। भामती धुरखुर सँ लागलि ठाढ़ि देखल जाइ छथि)

प्रकाशांत

[मंचपर इजोतक संग-संग नेपथ्यसँ बच्चा सभक संस्कृत श्लोकक अभ्यास सुनल जाइछ। भामती आ शाम्भवी संग-संग प्रवेश करइ छथि। भामती आ शाम्भवी गप्प करैत मंचक अग्रभागमे चलि अबइ छथि। पुरन्दर प्रवेश क`कऽ घर`क मुँहपर ठाढ़ रहैछ। पुरन्दरकें देखि भामती आ शाम्भवीक गप्प बन्न भऽ जाइ छनि। पुरन्दर आगू बढ़िकऽ दुनू तक अबैछ]

पुरन्दर - हमर धृष्टता माफ करब।
(भामती आ शामभवी एक-दोसरकें देखइ छथि)
...*(भामतीसँ)* अहींक बिचारे बिचार। मुदा, हमर आग्रह अछि जे एकबेर हमरा बातपर गौर करियै आहाँ। अवसर बेरि-बेरि नहि अबइ छइ।

भामती - हम सोचियेकऽ कहने रही।

पुरन्दर - हम अहाँक स्वाभिमानवक प्रसंसा करइ छी, तथापि...।

शाम्भवी - *(भामतीक कान्हपर हाथ रखैत)* हय, हम जाइ छी एखन। आएब फेर बादमे।

भामती - *(शाम्भवीक हाथ पकड़ि)* तोरासँ एकटा गप्प अछि।

पुरन्दर - हम एहि दुआरे बेकल छी जे सम्प्रति चटिया भेटि रहल अछि। एकबेर जमि गेलहुँ तँ पाठशाला चलैत रहत। हम तँ अपन जानिकऽ कहइ छी।

भामती - हम आहाँक उत्कंठा बूझि रहल छी। सभटा बेसिये सोचि रहल छी आहाँ।

शाम्भवी - *(मुस्किआइत)* हम किछु बाजू?
(पुरन्दर कनडेरिये शाम्भवीके देखैछ)

पुरन्दर - *(बलधकेल मुस्कीक संग)* आहाँक अधिकार सुरक्षित अछि।
(शाम्भवीक भृकुटि तना जाइ छनि। हाथ बान्हि कऽ एक डेग अगुआ जाइ छथि)

शाम्भवी - सखी अपने कतेक लूरि ढंग जनइ छथि। ताहिसँ फुरिसतिये नहि भेटइ छनि। राजक सहायता कें अग्राह्य बुझइ छथि। हिनकर स्वाभिमानक प्रशंसा करक चाही अहाँकें।

भामती - दोसर, हम पढ़ौनीकें ब्यवसाय नहि बनबऽ चाहइ छी। स्वेच्छासँ जे एला, पढ़ा दइ छियनि।

पुरन्दर - ने तँ हम तर्क करब, ने तँ जोर देब। हम असहाय

जानिकऽ थोड़बे सहयोग कऽ रहल छी? ई तँ हमर कर्त्तव्य अछि।

शाम्भवी - *(कटाक्षपूर्ण मुस्की दैत)* से तँ गाममे अहाँ एकटा आदर्श छी।

[पुरन्दर भीतरे-भीतरे कटि रहल अछि। सहज होयबाक निरर्थक प्रयास कऽ रहल अछि]

अहाँक महानताक वर्णन नहि होअय।

पुरन्दर - *(खिसिआएल)* हमरा ककरो प्रमाणक जरूरति नहि अछि।

(भामती दिस उन्मुख भऽ) अहाँ सोचबै हमरा बातपर।

(शाम्भवीकें कटाक्षसँ देखैत) हिनकर विचार धरि लैये लेब।

शाम्भवी - से तँ अहूँकें विचार दऽ सकइ छी, किन्तु से मात्र प्रयोजनवश।

(पुरन्दर बाहर होइछ)

शाम्भवी - *(भामतीक कान्हपर हाथ धऽ)* की सोचऽ लगलहक?

भामती - *(शाम्भवीक हाथ पकड़ि)* यैह जे तोरे सन ढीठ बनऽ पढ़त, तहने उद्धार अछि।

आबऽ, कने बैसी। तेना ने बथा गेलइ जे ***(दुनू गोटो चौकीपर बैसइ छथि)***

शाम्भवी - अपराध बोधसँ हम ग्रसित छी जे तोरा सचेत नहि

कयलहुँ, वस्तुत: ककरो व्यक्तिगत जिनगीमे दखल-देहानी देबाक हमरा अधिकार नहि अछि। हम, करब सँ बेसी, कहब सँ डेराइ छी। अपवाद जोड़ऽमे ककरो लगिते की छइ?

भामती - रातिकऽ लगैत रहैये जेना कतेक आकृति घातमे बैसल अछि ! रस्ता-बाटमे कतेक आँखि डँसऽ लगैत अछि! बाहर नञि निकलब तऽ बनत नञि।

सभटा बुझइ छिअइ, मुदा की करियौ हम ! .... किछु सुनबामे अयलऽहए की?

शाम्भवी - क्यो नहि किछु बाजओ ताहिसँ की? मुँहपर तँ सभटा लिखले रहइ छइ। तों चिन्ता जुनि करह।

भामती - कोना ताकऽ लगइ गुम्हरि-गुम्हरि कऽ तोरा दिस हय! नहि जानि, एकरा सँ पिंड कोना छूटत !

शाम्भवी - *(मुँह अँइठैत)* ऊँऽ ! बिनु पेनीक लोटाक अतेक सोच! ओहो हमरा चिन्हिते अछि।

भामती - की कहलहक? बिनु पेनीक लोटा?

(भामतीकें भभाकऽ हँसी लागि जाइ छनि)

...(हँसैत-हँसैत) खूब उपमा सुझलऽ तोरो।

शाम्भवी - बुझलहक नहि। उपकरि कऽ उपकार करऽवला लोक छथि ई। एक नम्मरक लुच्चा !

(भामती शाम्भवीक मुँह ताकऽ लगइ छथि)

हमर मुँह कियेक ताकऽ लगलहक हय?

भामती - तों सदति बुझौवलि बुझबऽ लगइ छह हमरा।

शाम्भवी - सत् बात पूछइ छह, तँ एकरा मुस्कीपर हमर देह जरि जाइत अछि। *(अन्यत्र देखैत)* छिनरबा नहि तन !

भामती - *(शाम्भवीक हाथ पकड़ि)* तों किछु नुका रहलि छह हमरा सँ।

शाम्भवी - जहन किछु रहय, तहन ने नुकाएब तोरासँ।

भामती - तऽ बातकें एतेक भरिया किएक रहल छहक? *(शाम्भवीक हाथ अपना करेजसँ सटबैत)* देखऽ तँ, हमर करेज कोना धुक्-धुक् कऽ रहल अछि!

शाम्भवी - हय, पुरुष बनिकऽ रहऽ नहि तऽ ई समाज ससरऽ नहि देतऽ।

भामती - *(दृढ़तापूर्वक)* हमर दूटा बात मोन रखिहऽ। नारीत्वे हमर धर्म अछि आ पतिपरमेश्वर।

शाम्भवी - तोरा मनःस्थितक अटकर हमरा अछि।

भामती - तों तँ छह हमर संकटमोचनि।

शाम्भवी - हय, करमीसाग नहि उपटलैये संसारसँ। तोरामे अपने आर कतेक लूरि ढंग छह। *(क्षणिक चुप्पी व्याप्त होइछ। दुनू गोटे शून्यमे ताकइ छथि)*

शाम्भवी - *(भामतीक कान्हपर हाथ धरैत) जा देखहक गऽ*

पढ़ौनी। (भामतीक दाढ़ी डोलबैत)

कने हँसि दहक तँ हम जाएब।

(भामती मुस्किया उठइ छथि)

...इएह, भेलइ ने !

(दुनू गोटे मुस्किआइत उठइ छथि। बच्चा सभक पढ़बाक समबेत स्वर सुनबामे अबैछ। भामती शाम्भवीकें मुँह तक अरियातइ छथि। शाम्भवी बाहर होइ छथि। चटिया सभक स्वर मुखर होइछ। प्रकाशांतक क्षणभरि बाद तक चटिया सभक समवेत स्वर सुनल जाइछ जे आस्ते-आस्ते विलिन होइछ)

■

दृश्यः

[तीन-चारिटा सरबामे विभिन्न रंग नेने बाहरक इजोत मे भामती एकटा चित्र पारऽमे व्यस्त छथि। पुरन्दर प्रवेश करैत-करैत पएर छिपि धुरखुर लागि भामतीक चित्रकारी देखऽ लगैछ। किछु क्षण बाद पुरन्दर खखसि दैछ। भामती नींचा ससरल आँचर सम्हारइ छथि।]

भामती - एना चुपचाप किये ठाढ़ छिऐ यौ?

पुरन्दर - *(घरमे प्रवेश कऽ)* सएह देखै छी तऽ घर साक्षात्

सरस्वतीक छनि। शास्त्र लेखन, लिखिया-पढ़िया आ विभिन्न कलाक मन्दिर अछि ई घर। मात्र एकटा अभाव देखबामे अबैछ। *(कलबल भामतीक समीपमे बैसि)* की अहाँ गीत गाबऽ जनइ छी?

भामती - *(व्यस्त रहैत)* क्षमा करब। आइये एगोटे के देबाक अछि ई।

पुरन्दर - ओह, क्षमा तँ हमरा माँगक चाही !

(भामती चुपचाप चित्र पारऽमे तन्मय छथि। पुरन्दर आतुरवश भामतीक केश राशिपर हाथ फेरऽ चाहैछ, मुदा साहसक अभावमे हाथ छीपि लैछ। भामती सोझ भऽ चित्र लऽ निंघारऽ लगइ छथि। पुरन्दर घेंट नमराकऽ मुरियारी दैत चित्र देखैछ)

... ई तँ जेना गप्प कऽ रहल अछि !

(चित्र निंघारैत-निंघारैत भामतीक मुँहपर आत्मतुष्टिक भावना उभरि अबइ छनि।)

...अहाँमे आर कोन-कोन कला अछि जकरा अहाँ नुकौने छी?

(चित्र राखि भामती पुरन्दर दिस उन्मुख होइ छथि)

भामती - कला मात्र हमरेमे देखऽ मे अबैत अछि?

पुरन्दर - *(लोलुप आकृति)* आहाँ तँ कलाक प्रतिमा छी। अहाँक जोड़ा भेटब बड़ दुरुह अछि। अहाँ तँ मात्र अही सभमे

लागल रहितहुँ तँ बढ़ियाँ रहैत। तें हम पाठशालाक विचार देने रही।

(भामतीक मुँह लाल भऽ जाइ छनि। ओ सोझे उठि जाइ छथि)

हम जाइ छी आइये एकटा नौरिन पठा दइ छी। अहाँक कला लेल आहँके चिन्ता-मुक्त कयनाइ अनिवार्य अछि।

भामती - हमरा एखन एकेटा चिन्ता अछि। बूझल अछि से अहाँकें?

(पुरन्दर चुपचाप बकर-बकर देखैछ।)

...एखन अहाँ हमरा व्यवधान कएल अछि। एखन हमर मोन ओहिमे ढुकल छल। *(कहैत-कहैत भामती तमतमा जाइ छथि)*

पुरन्दर - कला बुझनाहरो तँ चाही।

भामती - *(टाट पर अंकित चित्र सभ देखबैत)* की आइ तक एहि सभपर नजरि नहि गेल छल?

(पुरन्दर टाटपर अंकित चित्र के देखि रहल अछि)

पुरन्दर - विश्वास करू, कय दिन कहऽ चाहलहुँ, मुदा...।

भामती - *(हल्लुक हँसी संग)* मुदा निरस लागल, सएह ने?

पुरन्दर - ओना अहाँ जे अर्थ लगाबी, अहाँक चर्च धरि गाम भरिमे होइत अछि।

भामती - पूर्णिमा पीसीक चर्च नहि होइ छनि? हुनकर तँ पएर धोयनो हमरामे नहि अछि !

पुरन्दर - हुनकर बात आब पुरना गेल छनि। लोकक अभिरुचि नव-नव कलाकृतिमे स्वभाविक छइ।

(भामती अवसाद भरल मोन नेने टहलऽ लगइ छथि।)

.. ई चित्र किनका देबाक अछि?

(भामती ठाढ़ि भऽ पुरन्दरकें घूरऽ लगइ छथि)

भामती - *(तमतमाइत)* हमरा नीजी बातमे एतेक दखल-देहानी किएक कऽ रहल छी अहाँ? अहाँक अनुपस्थितिमे जौं कोनो पुरुष अहिना अहाँक घरमे बरजोरी अधिकार जमाकऽ भौजी संग करनि, तँ हुनका अरघतनि?

पुरन्दर - हँ यैह जेऽऽ....! माने जेऽऽ.... ! अच्छा, एहेन प्रश्न हठात कियेक उपजल अहाँक मोनमे?

भामती - की हमरा नितान्त स्वाभाविक प्रश्नक यैह उत्तर अछि?

पुरन्दर - लोक तँ यैह बुझैत अछि जे अहाँ हमर धर्म बहीन छी।

भामती - लोक बुझैत अछि कि अहाँ बुझबइ छिअइ? आबो तँ जाउ एतऽ सँ ?

(पुरन्दर किंकर्त्तव्यविमूढ़ भऽ जाइछ)

... हमरा नितांत एकांत नीक लगैत अछि !

पुरन्दर - हँ हँ कियेक नहि ! हजार बेर ! मुदा हमरा लगैछ जेना

क्यो हमरा विरुद्ध अहाँकें भड़का रहल अछि।

भामती - अहींक बात सच ! से नीक कि अधलाह?

(पुरन्दर शून्यमे देखऽ लगैछ। क्षणभरि लेल स्तन्धता व्याप्त रहैछ)

... भ्रातृद्वितीया मोन नहि रहैत अछि?

पुरन्दर - *(सेप घोंटैत)* हँ हँ, से तऽ ! ....अच्छा हम चलइ छी।

(पुरन्दर बाहर होइछ।)

भामती - *(साँस छोड़ैत)* ओह ! बड़ लुच्चाक पाला पड़ल अछि!

(सोचैत ठाढ़ि छथि।) *(मंच अन्हार होइछ।)*

■

दृश्य

[बाहरमे बर्खा होएबाक भान भऽ रहल अछि। भामती उपर-झापरसँ तीतलि प्रवेश करइ छथि। आँचरसँ हाथ मुँह पोछैत दोसर घर जाइ छथि। नूआ फेरिकऽ प्रवेश करइ छथि

खोंखी होइ छनि। टाटपर टाँगल एनाक समक्ष ठाढ़ि छथि कि पुरन्दरक प्रतिबिम्ब देखऽमे अबइ छनि]

भामती - *(घूमिकऽ)* एना चोर जकाँ कियेक बैसल छिअइ यौ? कखन एलियै?

('चोर' शब्द सुनि पुरन्दरक निर्लज्ज मोन खसि

पड़ैछ। भामतीक साहसबढ़ि जाइ छनि। मुँह तमतमा जाइ छनि।)

पुरन्दर - *(सेंप घोंटैत)* अचानक वृष्टिपात होबऽ लगलै एतऽ अबैत-अबैत। खोज-खबरि सेहो नहि लेने रही अहाँक से मोन अहूछिया कटैत रहय।

भामती - आ तें निर्लज्ज जकाँ अनका घरकें अपन जानि ढुकि पड़लहुँ, नहि? एतेक बर्खमे भ्रातृद्वितीया लेल मोनमे अहूछिया नहि कटलक?

(पुरन्दर निस्तेज भऽ जाइछ। घुरि जाइछ जाय लेल)

पुरन्दर - हमर तकदीरे तेहने अछि। सोचइ छी किछु, भऽ जाइत अछि किछु आर ! क्षमा करब।

(पुरन्दर जाय लगैछ)

भामती - सुनू ! *(खोंखी होइ छनि)* .... अति सर्वत्र बर्जयेत ! आइ हम भौजीकें कहि अबइ छियनि।

(पुरन्दर चुप रहैछ।)

...प्रतिष्ठा प्राप्त करऽ लेल सलज्ज बन`ब नहि सीखि भेल?

(पुरन्दर जाय लगैछ)

... एकटा आर बात ! जतेक हम असगर छी, ततेक अब्बल नहि।

(खोखी होइ छनि)

... कान खोलिकऽ सुनि लिअ ! अहाँक नजरिमे भलेही हम दयाक पात्र छी, मुदा हम तकर आग्रही नहि छी। ... ककरो नहि छी।

पुरन्दर - हम व्यर्थ अहाँके आहत कएल अछि !

भामती - व्यर्थ नहि, जानि बुझिकऽ ! भागइ छी कि नहि! निर्लज्ज नहि तन !

(पुरन्दर बाहर होइछ)

... कुकुर नहि तन !... थूऽ !

(भामती क्षणभरि ओतहि ठाढ़ रहइ छथि। बाहर बर्खा होएबाक भान होइछ। भामती खोंखैत-खोंखैत करेज धऽकऽ बैसि रहइ छथि।)

मंच अन्हार होइछ।



दोसर अंक

पन्द्रह-सोलह बर्खक अन्तर

मंच सज्जा :-

ओएह घर। टाट सँ माटि ठाम-ठीम उखड़ल। घर`क स्थिति पहिल अंक सँ बहुत दयनीय। लिखिया-पढ़िया मिटाएल। दुनू मुँह पर पुरइनीक पात अंकित। भगवतीक चित्र पूर्ववत।

अरगनी टूटल-लटकल। चौकीक एकटा पौआ ईंट अथवा पाथर गेंटकऽ बनाएल। शीतल-पाटी आ चटकुनीक पात निकलल। वाचस्पतिक शीतलपाटी दऽढ़।

अरगनी दिसका भागमे वाचस्पतिक बैसार। वाचस्पतिक शीतलपाटी हुनकर बैसार आ ओछाएन दुनूक काज करैछ। आगू मे काठक ऊंचगर पीढ़ी लिखबा लेल जाहि पर माँटिक दू-तीनटा सरबा मोसिदानी रूप मे, तीन-चारिटा करचीक, एकटा शाही कांटक कलम आ किछु पत्र, लिखल आ सादा दुनू राखल। पीढ़ीक नीचामे पत्रक दू-तीनटा गेंट राखल। तकरे कात मे दीप आ डिबिया राखल।

घर`क मुँह लग कातमे एकटा पुरान घैल, लोटा, गिलास, आ कने हटिकऽ एक जोड़ा खराम राखल।

वस्त्र :

वाचस्पतिक केश आ दाढ़ी अधखिच्चू आ बढ़ल। ग`र आ बाँहि पर रूद्राक्षक माला। भामतीक केश तिलकल। नूआ मे

चेफड़ी लागल। माँग सिन्नुर सँ भल। कपार पर लाल ठोप। हाथ मे दू टा कऽ लहठी।

समयानुकूल शाम्भवी, पुरन्दर आ सौमित्र पर बयसक प्रभाव परिलक्षित।

■

दृश्य :

मंच पर अलसाएल इजोत। वाचस्पति लिखबा मे मग्न छथि। लिखल भऽ गेल पन्ना वामा हाथे वामा कात कऽ रखने जाइ छथि।

भामती दोसर घर`क मुँह पर अढ़ मे केवाड़ सँ ओङठलनि वाचस्पतिक बैसार दिस देखैत बैसलि छथि।

वाचस्पति कें दू-तीन बेर हाफी होइ छनि। लघुशंका हेतु बाहर जाइ छथि। भामती उठिकऽ वाचस्पतिक बैसार ल`ग आबइ छथि। मोंसिदानीमे मोंसि ढारै छथि। पत्र सभकें सरिया दैत छथिन। दीप मे तेल देखइ छथि। सभ सरंजाम कें तजबीज सँ देखि पूर्ववत अपना जगह पर आबि बैसि रहइ छथि।

वाचस्पति बाहर सँ आबि घैल सँ पानि ढारि पीबइ छथि। जगह पर आबि लिखबा लेल उद्यत होइ छथि, मुदा औंघीक प्रबलतावश ठामक-ठामहिं बाँहि पर माँथ धऽ पड़ि रहइ छथि।

भक टुटला पर वाचस्पति कें सुतल देखि भामती सेहो ठामक-ठामहिं पड़ि रहइ छथि। किछु कालतक दुनू कें अहिना देखल जाइछ।

मंच पर इजोत होयबाक पहिनहिं सँ `उँह`, `उँह`, शब्द सुनल जाइछ। इजोत होयबाक क्षणभरि बाद एकटा बृद्ध घर`क मुँह पर आबिकऽ ठाढ़ होइ छथि।)

वैद्य -क्यो छी?.... हम छी वैद्य।

(किंचित घोघ काढ़ने शाम्भवी एकटा चटकुनी नेने दोसर घर सँ अबइ छथि। चटकुनी बीच घरमे ओछाकऽ एकात भऽ ठाढ़ि भऽ जाइ छथि।)

...हे, हम बैसऽ नहि आयल छी।

(चटुकनी वैद्य दिस कने घुसकऽबैत शाम्भवी संकेत सँ बैसबाक आग्रह करइ छथिन।)

...जखन एतेक आग्रह अछि तऽ लिअ बइस जाइ छी।

(घर मे प्रवेश कऽ बेंतकें घरक मुँह ल`ग अटका कऽ राखऽ जाइ छथि, मुदा दुनू बेर खसि पड़इ छनि।)

...धुर जो ! रह खसले !

(बेंत खसले छोड़ि चटकुनी लग चलि अबइ छथि। शाम्भवी बेंत ठाढ़ क`कऽ राखइ छथि।)

...*(बइसकऽ)* कोनो ननकिरबा नहि अछि?

अखने अहाँक छोटका ननकिरबा गेल छल।

(बात सुनिते शाम्भवीक नेना एकटा शीशी नेने प्रवेश करैछ।)

नेना -बाबा, कखन एलियै? हम मधुक शीसी ताकऽ लगलियै घर मे।

(शाम्भवी बेटाक हाथ सँ शीशी लऽ लइ छथि। वैद्य दबाइक पुड़िया सभ निकालइ छथि।)

वैद्य -*(एकटा पुड़िया ल` कऽ)* हे, एहि मे बड़िया सभक अछि। चारि बेर कऽ देबनि मधु संगे।

(वैद्यक हाथ सँ ल` कऽ नेना माय कें दैछ। शाम्भवी पुड़िया ल` क` ओहि घर जाइ छथि।)

...*(नेना सँ) बैसऽ* ने।

(नेना बैस जाइछ।)

...मौसी कोना छथुन्ह?

नेना -उठि-बैसि नहि होइ छनि।

वैद्य -कोना बैसि हेतनि। हमरा तऽ सोलह आना विश्वास अछि जे वाचस्पतिक संग-संग ईहो बताहि भऽ गेल छथि। कहू त` एहेन कोन ग्रन्थ लिखा रहल अछि ! कतेक मना कयने रहियनि यार कें एकर विवाह नहि करबऽ लेल, मुदा होनी कें के टारत ! अपने तऽ दुनू गोटे मुक्त भऽ गेलाह। आब देखैत रहओ ई समाज आ भोगथु ई बेचारी।

(ओहि घर सँ शाम्भवी चुटकी बजाकऽ बेटा कें बजबइ छथि। नेना माय ल`ग जाइछ। शाम्भवी जे

किछु फुसफुसाकऽ कहइ छथिन से स्पष्ट-सुनल जाइछ।)

शाम्भवी -पुछहुन तऽ तोरा माँसी के देह मे दम्म किये ने लगै छनि?

वैद्या -गाइक दूधमे पानि मिलाकऽ दैत रहियनु ! सभटा ठीक भऽ जेतनि।

(नेना पूर्वबत वैद्य ल`ग आबिकऽ बैस जाइछ। शाम्भवी परोछ होबऽ लगइ छथि कि वैद्यक बात पर थम्हि जाइ छथि।)

...एम्हर दऽ चल`ब छोड़ि देलहुं। नहिं देखल जाइये ई घर। की चुहचुही रहइ एकरा घर`क। तेहेन ने शोधनमूर्ति जन्म लेलकइ जे खोप सहित कबुतराय नमः। एकरे चलते माय प्राण तेयागि देलथिन। कहू त` ई त` जानिकऽ प्राण देब भेल ने ! राजक अनुदान लेबऽ लेल लोक तरबा खिया लैत अछि। ई कोन बुधियारी जे राजक अनुदान नहिं लेब, आ अंगने-अंगने पिहुआ ल` क` बौआइत रहब !

(कटाक्षक मुस्की ठोर पर रेंगऽ लगइ छनि।)

... एकरा बतहपनी छोड़ि लोक अकिलमंदी थोड़बे कहतनि !... ई बतहा जिनगी तऽ गुदस्त कऽ लेलकइ बाहरे-बाहर। आब किछु दिन सँ रहितो छइ नियामक भ` कऽ, तऽ कोन्ह मे घोसिआएल रहैत छइ। पुरुषक

कहूँ एहेन लक्षण भेलैये ?

(शाम्भवी संकेत सँ बेटा कें बजबैत दोसर घर`क मुँह ल`ग जा ठाढ़ि भऽ जाइ छथि। ओतऽ ठाढ़ि भऽ बेटाक कान मे किछु फुस-फुसाइ छथि।)

...की कहइ छथुन माय?

नेना -*(ओतहि सँ)* मौसा घरमे लिखइ छथिन। दरबज्जा पर लोक खोंझबइ छनि, तें आँगन धेने छथिन।

वैद्य -*(विद्रुप मुस्की)* हँ, वेद-पुरान सँ नम्हर आ बढ़ियाँ!

नेना -ई ग्रन्थ सभसँ उत्कृष्ट हेतनि।

वैद्य -कहलिय तऽ, एहेन ग्रंथ आइतक लिखले नहि गेलैये पृथ्वी पर !

(नेना बकर-बकर मुँह देखैछ)

शाम्भवी -*(सुनाकऽ)* पुछहुन तऽ, आर कोनो औषधि देथिन।

वैद्य -नहि। भीतर दुर्बलता छनि। पौष्टिक आहारक प्रयोजन छनि।

(क्षणिक स्तब्धता व्याप्त रहैछ।)

...*(शून्य मे देखैत)* लिखैत हेतइ; काटैत हेतइ। आ फेर लिखैत हेतइ ! *(नेना दिस उन्मुख भऽ)* ई ग्रंथ शेष कोना होअ? *(मुस्किआइत)* लिखनाहर पति, देखनाहरि पत्नी। *(ठाढ़ भऽ)* पहिलुका ग्रंथ भेलइ, भऽ गेलइ। एम्हर-ओम्हर कऽ लिखनाहर लिखिते अछि।

नेना -बाबा, तहन तऽ सभ लिखि लितइ।

वैद्य -हँ बाउ, संस्कार बजैत अछि अहाँक।

(शाम्भवी बेटा कें आँखि तरेड़ै छथि।)

...देखहक तऽ हमर बेंत कहाँ छइ।

नेना -इएह एतऽ अछि बाबा।

(नेना बेंत दैछ। बैद्य बेंत टेकैत बाहर होइ छथि।)

शाम्भवी -*(घोघ हटबैत)* हऽ हऽ ! ककरा कहू कम, ककरा कहू बेसी !

(दोसर घर सँ भामतीक कुहरब सुनल जाइछ)।

- प्रकाशांत -

■

दृश्य :

(मंच पर इजोतक संग-संग पुरन्दर कें हुलकी मारैत देखल जाइछ। दबले पएर घर मे प्रवेश करैछ आ एकरत्ती ठाढ़ भऽ आहटि लैछ। आश्वस्त भऽ लिखलाहा गेंट सभकें कलबल गमछा मे बान्हऽ लगैछ आ चकुआ-चकुआ कऽ घर'क मुँह दिस देखि लैछ।

मोटरी ल'क' बिदा होइछ कि तखने घर'क मुँह पर शाम्भवी कें ठाढ़ि देखि ठकमूड़ी लागि जाइ छइ।

शाम्भवी कें सेहो अकबक नहि फुरा रहल छनि। पुरन्दर निर्लज्ज मुस्की देबऽ लगैछ, कि शाम्भवीक साहस बढ़ि जाइ छनि।)

शाम्भवी -ओऽऽ ! तऽ हमर शंका यथार्थ निकलल !

(मोटरी देखबैत) एहि मे की अछि?

(पुरन्दरक हाथ सँ मोटरी ससरऽ लगैछ। ससरिकऽ खसि पड़ैछ। पत्र सभ छिड़िया जाइछ। पुरन्दर घसकऽ चाहैछ, मुदा मुँह पर शाम्भवी अडिग ठाढ़ि छथि।)

...लाज-बिचार उठाकऽ पीबि गेलहुँ? सभ तरहें एकटा अवलाक पाछू पड़ैत कनिको संकोच नहि होइत अछि? ठहरू, आइये हम रौद मे ठाढ़ करइ छी ! लोको तऽ बूझत !

पुरन्दर -*(कननमुँह होइत)* जे दंड उचित बूझी, अहीं दऽ दीअ!

शाम्भवी -एहि सँ पहिनहुँ आहाँ हमरा संग प्रतिज्ञा कऽ चुकल छी ! आबऽ दीयनु सखी कें पहिने ! हुनको तऽ ज्ञात हेतनि हुनका प्रति आहाँक दरेग !

पुरन्दर -*(कलपैत)* देखू, हम जहर-माहुर खा लेब !

शाम्भवी -अहाँसन लोक कैयबेर जहर खाइत अछि !

पुरन्दर -एकबेर आर बकसि दीअ हमरा !

शाम्भवी -एकबेर कि हजार बेर, की फर्क पड़ैत अछि अहाँ लेल?

पुरन्दर -तीन सत्ते सत्त ! ई तेसर वेर अछि !

शाम्भवी -ताहि सँ की?

पुरन्दर -*(हाथ जोड़ि)* जाय दीअ हमरा !

शाम्भवी -केहेन बेकल छी, से बुझइ छिअइ? अहाँ सँ कोन कर्म बाँकी अछि? अहाँ विश्वासक पात्र नहि छी।

पुरन्दर -अहाँ जाहि तरहें कहब, जे कहब, हम प्रस्तुत छी। मुदा कृपया सभटा अहींतक सीमित रहय!

(शाम्भवी सोचऽ लगइ छथि।)

शाम्भवी -हाथ मे जनौ लिअ !

(पुरन्दर सएह करैछ)

...एहेन दुष्कृत काज करबाक साहस कियेक कएल अहाँ?

पुरन्दर -विद्वत मंडली जनइ छथि जे शंकर-भाष्य पर हम शोध कऽ रहल छी, से...।

शाम्भवी -आ ई देखाकऽ कि नकल क` कऽ राजपुरस्कार प्राप्त करितहुँ, सएह ने?

(पुरन्दर जनौ सहित करजोड़ि ठाढ़ अछि। शाम्भवीक नजरि छिड़िआएल पत्र सभ पर जाइ छनि। ओ अनायास ओम्हर लपकि पड़इ छथि।

अवसर पाबि पुरन्दर बाहर भऽ जाइछ। पत्र सभकें देखि शाम्भवीक आँखि डबडबा जाइ छनि। पत्र

सभ बीछऽ लागइ छथि। सभ कें सहेजिकऽ करेज सँ सटा लइ छथि।)

...*(गेंट निंहारैत)* देखइ छीही, माय कहबऽ लेल कोन-कोन अधापन उठा रहलि छथि हमर सखी?

(शाम्भवी कें एना देखि भामतीक एकटा पएर चौकठि पर आ एकटा हाथ धुरखुर पर थम्हि जाइ छनि। बेसीकाल अपना कें नहि रोकि, गौ सँ आबिकऽ शाम्भीक बगल मे बैसि हुनका पीठ पर एकटा हाथ राखइ छथि।)

भामती -कोना भेलइ हय?

(शाम्भवी पल भरि भामती कें देखैत रहइ छथि। गरा-बकौर लागि जाइ छनि।)

शाम्भवी -आइ तों कतहु कें नहि रहितह !

(आँखि सँ भट-भट नोर खसऽ लगइ छनि। गेंट भामतीक हाथमे दइ छथिन।)

... सभटा मिला लियहक।

(भामती एक हाथे गेंट सम्हारैत, दोसर हाथे शाम्भवीक हाथ पकड़ने उठइ छथि।)

भामती -*(शाम्भवी हाथ छोड़ैत)* आबऽ एम्हर बैसऽ। हम एकरा धेने अबइ छी बाकस मे ओहि घर।

(भामती ओहि घर जाइ छथि। शाम्भवी दू टा

चटकुनी चौकी त`र सँ ल` क` ओछबइ छथि। एकटा पर बैसि रहइ छथि।)

....*(प्रवेश करैत)* कोना की भेलइ?

शाम्भवी -अयँ हे, आश्चर्य छइ ने जे जोगीराज ओसारा पर लिखऽ मे मग्न छथि, आ घर मे दिनादृष्टिये डकैती भऽ रहल छलनि !

भामती -ओएह रहऽ ने? रस्ता मे देखने रहियै मूड़ी गोंतने चलि जाइत। आश्चर्य लागल जे आइ टोकलक ने कियेक!

(शाम्भवी चुपचाप भामतीक मुँह निहारि रहलि छथि। नोर टघरऽ लगइ छनि।)

शाम्भवी -हमहूँ नान्हिटा अपराधी नहि ने छी !

भामती -*(शाम्भवीक हाथ पकड़ैत)* एना तों किएक बजइ छहक?

शाम्भवी -छी तऽ हमहूँ मनुक्खे ने। हमरो मोन मे मिथ्या अवधारणा बनि जाइत अछि।

हम पानि भरऽ निकलल रही कि ता पुरन्दर कें देखलियै चकुआइत तोरा आँगन मे पइसैत। दोसर, सभतरि गुलंजर छइ जे ओहो कोनो ग्रंथ लिखबा मे व्यस्त अछि। अतेक दिमागि मे आबिते हम चोट्टहि चलि एलहुँ पाछुए लागलि। सभटा भगवतीक माया।

भामती -*(साँस छोड़ैत)* अंत बढ़ियाँ तऽ सभ बढ़ियाँ !

शाम्भवी -मड़वा तऽ लिखल भऽ गेल हेतह?

भामती -केदन आर रहथिन, से बड़े निहोरा करैत रहथिन ओसारा लिखि देबऽ लेल।

(शाम्भवी गंभीर भऽ सामने शून्य मे देखऽ लगइ छथि।)

...चुप कियेक भऽ गेलहक हय?

शाम्भवी -*(भामतीक हाथ पकड़ि)* जनितियै तऽ जोर नहि देने रहितियै तहिया। सत्ते, मिसर जी केहेन निशोख भऽ गेलथिन ! जिनगीक अधा भाग बाहरे-बाहरे रहलाह। घुरबो कयला तऽ किदन भऽ कऽ।

भामती -नहि नहि, एना नहि बाजऽ तों ! हमरा कथी सँ अधलाह अछि? हमरा पढ़ऽ-लिखऽ कें झोंक रहय, तें तो जोर देने रह`क। चीबौसो घंटा सोझा मे रहइ छथि। सदति हुनकर सेवा करबाक अवसर प्राप्त होइत अछि। एकरा तों कम बुझइ छहक?

शाम्भवी -तों सभ तरहें अपना कें मना लेने छह। जहियाँ सँ घर मे लिखऽ लगलथुनहें, हमरा सभ राति होइये जे अगिला भोर अवस्स किछु नव आ नीक सनेस ल`क` आएत। हमर अपराधी मोन बड़े अहुछिया काटि रहल अछि ओहि भोर लेल।

भामती -मुदा हमरातऽ ओहि भोरक प्रतीक्षा अछि जे हमरा हिनकर ई ग्रंथ देत आ हम देखा सकबइ लोक कें

एकटा विक्षिप्तक कृति।

(शाम्भवी चुप रहइ छथि।)

...फेर की सोचऽ लगलह`क ?

शाम्भवी -यैह जे पृथ्वी तोरे सदृश संतान पाबि धन्य होइ छथि।

भामती -*(मुस्किआइत)* आ तोरा सन सखी पाबि हम धन्य छी।

शाम्भवी -बस बस, अतेक बड़ाइ सैंतल नहि पार लागत।

(उत्सुक भेल सौमित्र प्रवेश करैछ।)

सौमित्र -मिसरजी एलथिन त?

शाम्भवी -धुर जो ! बात कहिया ने पुरना गेलइ।

सौमित्र -हमरा सभ लेल तऽ टटका गप्प छइ। कहाँ छथिन? कने टोका-नमस्कारी कऽ ली। ....चिन्हबो करता कि नञि?

भामती -हमरा तऽ नहिएँ चिन्हइ छथि।

शाम्भवी -तों सामने गेलहुनहें कहिया? तों एहि आरि, ओ ओहि आरि। बुझाइये, आब हमरे सभ कें किछु करऽ पड़त।

सौमित्र -*(आगू बढ़ैत)* ठहरऽ, हम फरिछाइये दइ छियह।

(भामती रस्ता रोकि ठाढ़ि भऽ जाइ छथिन)

भामती -नहि, ई तों हमरा पर छोड़ि दएह।

(सौमित्र थकमका जाइछ। शाम्भवी अपलक भामती कें देखऽ लगइ छथि।)

..(शाम्भवी सँ) तों चाहइ छह जे हम मेनका कि रम्भा बनिकऽ हुनकर तपस्या भंग कऽ दियनि?

शाम्भवी -तोरे खुशी मे हमरो खुशी। हमरा बात कें बिसरि जाह।

(सौमित्र चुपचाप पीठ घर दिस कऽ चौकठि पर बैसि जाइछ, से भान एहि दुनू कें नहि होइ छनि। तौनीक खूट सँ तमाकुल निकालैछ।)

भामती -तोहर भावना हम बूझि रहल छियह।

शाम्भवी -सत्ते, विश्वास करऽवला बाते नहि छइ !

(भामतीक प्रश्नसूचक नजरि शाम्भवी पर अटकि जाइ छनि)।

...हमर तात्पर्य अछि जे तोरा दुनू गोटे मे गप्प-सप्प नहिं छह, से लोक विश्वासो कोना करतइ?

(भामती अन्यत्र देखऽ लगइ छथि।)

...हमर बात तोरा लागि गेलह ने?

भामती -नीक कि बेजाय, अपने जानिकऽ कहइ छह ने? एतऽ अछिये के आर अपन?

शाम्भवी -हय, छगुन्ता तऽ एहि बातक अछि, जौं तोरा संग अतेक हेमछेम नहि रहैत तऽ हमहूँ आने जकाँ सोचितिअइ। कय राति ढुक्का लागि-लागि देखने छियह हम। की करितौं ! हमहूँ तऽ मनुक्खे छी?

भामती -तोरा स्थिति मे रहिकऽ हमहूँ तोरे जेकाँ सोचितियै आ करितियै। मात्र ई ग्रंथ हमरा समक्ष मे लिखि रहल

छथि। से देखि जाहि सुखक अनुभव हमरा भऽ रहल अछि, तकर वर्णन जौं हम कऽ सकितहुँ तऽ की छलइ!

शाम्भवी -आवेश मे किछु-सँ-किछु कहा जाइत अछि। बिसरि जइयहक से। ...देखहक हय, सौमित्र पड़ा गेलइ भरिसक!

भामती -*(मुँह दिस देखबैत)* आ, ओ के छइ?

शाम्भवी -*(ल`ग जाकऽ)* तोरी भला कें! बेसाहिकऽ एतऽ बैसल छहक, नहि?

सौमित्र -*(ठाढ़ भऽ)* से जे कहऽ, मुदा आइ सत्ते एकटा बड़ा भूल करैत-करैत बाँचि गेलहुँ हम। मुदा, एकटा बात! हमर आत्मा कहइ हय जे आब लगले हमरे सब जेकाँ साधारण मनुक्ख भऽ जेथिन मिसरजी।

शाम्भवी -हँ, से तऽ हमरो मोन कहि रहल अछि। मात्र ग्रंथ पूर्ण करबाक देरी छनि। अच्छा, आज्ञा दहक एखन। *(सौमित्र सँ)* चुपेचाप भागि नहि जइहएँ!

सौमित्र -आ ओतऽ जे सभक मोन लागल हइ से?

शाम्भवी -से सब नहि जानी-तानी हम।

(शाम्भवी बाहर होइ छथि।)

प्रकाशांत

■

दृश्य :

(वाचस्पति लिखबा मे डूबल छथि। दोसर घ`रक मुँह पर केबाड़ सँ ओङठलि भामती औंघी सँ झुकि रहलि छथि। रहि-रहि मेघक ठनकब सुनल जाइछ। औंघीक प्रबलतावश भामती निन्न पड़ि जाइ छथि। नेपथ्य सँ प्रबल वायुक आभाश होइछ। टाटक दोग सभ दऽ अबैत बसातक झोंक पर दीप झिलमिलाय लगैछ। वाचस्पति कें लिखबा मे व्यवधान उपस्थित भऽ रहल छनि। वामा हाथे दीप कें अरौत क`कऽ लिखबाक प्रयास करइ छथि।

बसातक एकटा प्रवल बेग सँ दीप अंततः मिझा जाइछ। हाथमे लिखनी लेनहि वाचस्पति निरुपाय-निसहाय चकुआय लगइ छथि।

एकबेर बहुत जोर सँ ठनका खसइ छइ जाहि पर भामतीक निन्न टूटि जाइ छनि। घर अन्हार देखि धड़फड़ाएल उठै छथि।

आँचरक अरौत मे बारल दीप लऽ कऽ प्रवेश करइ छथि। दीपक इजोत मे वाचस्पतिक दृष्टि भामतीक मुखाकृति पर पड़इ चनि। दीप राखि भामती जाय लगइ छथि तऽ वाचस्पति टोकि दइ छथिनः-)

वाचस्पति - सुनू!

(भामती चुपचाप ठाढ़ि भऽ जाइ छथि।)

...अहाँ के छी?

(भामती तथापि चुप छथि।)

...हम अहाँक परिचय पूछल अछि।

(भामती अंगूष्ठ सँ माटि खोधऽ लगइ छथि।)

की अहाँ बौक छी? जौं से तऽ संकेत दीअ।

भामती निश्वास छोड़इ छथि।

...अहाँ बहीर नहि छी, से हमरा विश्वास अछि, कारण, अहाँ हमरा बात पर ठमकि गेलहुँ अछि।

(भामती बाजऽ चाहइ छथि, मुदा बाजि नहि होइ छनि।)

अहाँ के छी? मनुक्ख, कि प्रेत कि किछु आर?

(गऽर साफ करऽ लेल भामती खकसइ छथि, मुदा नीक जेकाँ खसकि नहि होइ छनि।)

भामती -*(मद्धिम स्वर)* हम मात्र एकटा मनुक्ख छी स्त्री रूप मे।

वाचस्पित -से तऽ हमहूँ देख रहल छी। अपन परिचय दीअ आहाँ हमरा।

भामती -हमर परिचय आहाँ स्वयं छी।

वाचस्पित -*(उठैत)* हम स्वयं !

(आश्चर्य चकित शूय मे देखइ छथि। भामती दिस

उन्मुख भऽ) हम मिथ्या तऽ ने सुनल अछि?

भामती -*(कंठ साफ क`कऽ)* कथमपि नहि।

वाचस्पति -मुदा, हम तऽ नहि जनइ छी अहाँ कें।

भामती -अपन सोह अछि अहाँ के ?

वाचस्पति -माने?

(भामती चुप रहइ छथि।)

... की भेल? केहेन असौकर्य भऽ रहल अछि अहाँकें?

(भामतीक आँखि झंपा जाइ छनि।)

भामती -एखन किछु नहि फुरा रहल अछि।

वाचस्पित -हमरा बुझौअलि नहि बुझाउ !

भामती -हमर जिनगीये बुझौअलि अछि।

(वाचस्पति विडम्बना मे छथि। शून्य मे ताकऽ लगइ छथि।)

...सभटा स्वप्न जेकाँ लागि रहल अछि।

वाचस्पित -स्वप्न?

भामती -अतेक बर्खक बाद आखिर सोह भेल अहाँ कें जे क्यो आर अछि अहाँक घर मे।

वाचस्पित -*(आश्चर्य सँ अन्यत्र देखैत स्वगत)* घर मे माय, बाबू आ हम तीनिये गोटे रही ! फेर ई चारिम कतऽ सँ ! *(भामती दिस उन्मुख भऽ)* ई रंगरूप आ यौवन ! *(अपन देह टोबैत)* हमहीं तऽ ने स्वप्न मे छी ! *(भामती*

दिस हाथ बढ़बैत) हम अहाँक देह छूबि सकइ छी? *(हाथ छीपैत)* नहि, एना नहि। स्त्री माया रूप होइछ ! *(भामती अपन हाथ बढ़ा दइ छथिन। वाचस्पति सत्वर पाछू घुचि जाइ छथि।)*

...हमरा सुनल अछि जे अतृप्त आत्मा मनुक्खक शरीर धारण करबा मे प्रबीण होइत अछि।

भामती -*(हाथ बढ़बैत)* छूबि सकइ छी। अन्यथा निर्णय सम्भव नहि भऽ सकत।

वाचस्पित -*(सोचैत)* मानल जे अहाँ रक्त-मांस युक्त नारि छी, मुदा छी तऽ पर-स्त्री। हमरा लांछित करबाक एहेन कुचक्र किएक उपजल अहाँक मोन मे?

(सोचैत टहलऽ लगइ छथि।)

(भामती दिस घूमि) एकर दंड भोगऽ पड़त अहाँ कें ! हँ, अबस्स भोगऽ पड़त।

(भामती कें मुस्की आबि जाइ छनि।)

भामती -भोगि लेब।

वाचस्पित -भोगि लेब ? ...अतेक ढीठपना ! घोघ त`र मे रहऽवाली अतेक बाचाल ! निकलइ छी कि नहि हमरा घर सँ ?

भामती -घोघ, आ से पति सँ? *(कने टहलिकऽ)* बापक घर सँ महँफा निकलल रहय हमर। एहि घर सँ फरकिये निकलत आब।

वाचस्पित -अयँ !

(विस्फारित नेत्र सँ अन्यत्र देखऽ लगइ छथि)

हमर विवाहो भऽ गेल अछि !

(अख्यास करबाक मुद्रा मे पल भरि रहइ छथि।)

...हँ किछु-किछु मोन पड़ि रहल अछि जे हमर विवाह भेल अछि। *(उन्मुख भऽ)* मुदा, अहीं हमर स्त्री छी, तकर प्रमाण?

भामती -*(ल`ग मे आबि)* ई तऽ मात्र आरम्भ अछि। प्रमाण तऽ बहुत बातक ताकऽ पड़त।

वाचस्पित -आरम्भ कि अन्त, बिनु प्रमाणक विश्वासो कोना कऽ लिअ?

भामती -प्रमाण आ से अतेक शीघ्र?

(सोचैत तीन-चारि डेग टहलइ छथि।)

...(वाचस्पति दिस घूमि) पहिने अपना आप मे विश्वास आनऽ पड़त।

वाचस्पित -*(भामती दिस बढ़िकऽ)* आइ सर्वप्रथम कियेक देखि रहल छी अहाँ कें अपना घर मे?

(भामती सोचैत अन्यत्र देखऽ लगइ छथि।)

भामती -*(नियंत्रित भ` कऽ)* माय-बाबू तऽ अबस्स मोन होयताह?

वाचस्पित -*(स्वाभाविक भाव)* सुनू, ईहो कोनो कहऽवला बात

छइ?

भामती -हुनकर श्राद्धकर्म तऽ अबस्स मोन हएत?

वाचस्पति -*(हतप्रभ)* अयँ से की? .... ओ लोकनि नहि रहलाह ! *(विस्फारित नेत्र सँ भामती कें देखैत)* सत्ते, माय-बाबू नहि रहलाह?

भामती -एहेन कथा, ताहि मे हम स्वयं असत्य कोना बाजि सकइ छी?

(वाचस्पति सत्वर उठि धड़फड़ाएल दोसर घर जाइ छथि। बिलाप करैत सामनेक मुँह दऽ प्रवेश करइ छथि, आ माथ ध` कऽ बैसि जाइ छथि)

वाचस्पित -हाय रे हतभाग्य ! जन्मदाताक श्राद्धकर्म तक नहि कऽ सकलहुँ !

(कानऽ लगइ छथि। भामती आबिकऽ ल`ग मे बैसि जाइ छथिन)।

भामती -दुनू आगूए-पाछूए विदा भऽ गेलाह।

वाचस्पित -सभ विनाशक कारण हम अपने छी !

भामती -अहाँके ताकबाक बहुत प्रयास भेल।
राज सँ सिपाही जहाँ-तहाँ पठाओल गेल, मुदा...।
(वाचस्पति मूड़ी उठा भामती कें देखऽ लगइ छथि।)
...(मूड़ी गोंति) अंत मे सभ मानि लेलनि जे अहाँ शंकाराचार्यक असल शिष्य बनि गेलहुँ !

वाचस्पित -अर्थात् `ब्रह्म सत्य, जग मिथ्या`, अर्थात् हम गृह त्यागी भऽ गेलहुँ, सएह ने?
(भामती चुप रहइ छथि।)
...सभटा तिलिस्म जेकाँ लागि रहल, अछि ! नहि जानि कोन भूत सवार छल हमरा कप्पार पर।

भामती -सभटा हमरा कपारक दोख। विवाह होइते अहाँ बाहरे-बाहर रहऽ लगलहुं। सभ हमरे दोख दीअय ! मात्र माय-बाबू बड़ मानथि। माय कहथि जे एकांतवासी आ अध्ययनशील अहाँ एतनीटा सँ छी। ... संतोष एतबे सँ होअय जे हमरा सँ फराक रहि ग्रंथ सभक रचना अहाँ कऽ रहल छी। कोनो नवीन ग्रंथक रचना दऽ सूनी तऽ अपना भाग्य पर गर्व होअय। ***(देखबैत)*** सभक प्रतिलिपि हम रखने छी।

वाचस्पित -हम तऽ सुदूर दक्षिण, तत्पश्चात् पश्चिमोत्तर सीमा गेल रही। गुरुदेव शंकराचार्यक जन्मस्थान आ हुनकर भ्रमण स्थल सभक दर्शन करबाक बड़ उत्कट इच्छा सता रहल छल। हमरा अबिते कियेक ने कहलहुँ?

भामती -अहाँक चिंतन, लग्न देखि चुपे रह`ब उचित छल। दोसर, डर होअय जे कहूँ उन्टा प्रतिक्रिया ने पड़य अहाँक मस्तिष्क पर। लोक सभ तऽ बहुत प्रयास कयलक। अंत मे सभ अहाँके विक्षिप्त मानि छोड़ि देल`क। लोकक कूटचालि पर अहाँ नियामक भ`कऽ

आँगने मे लिखऽ-पढ़ऽ लगलहुँ। ताहू लऽ कऽ हमरा कम नहि सुनऽ पड़ल अछि।

वाचस्पित -पति संग गप्प करऽ मे अहाँ कें साहस नहि भेल?

भामती -चतुर्थियो राति मे अहाँ हमरा टोकब कतऽ सँ, तऽ कोनो ग्रंथ भरि राति उन्टबैत रहि गेल रही। कहियो बात भेल रहैत तहन ने। ``जहिया कहियो गाम आबी तऽ आंगन सँ मात्र खयबाक संबंध रहय।

वाचस्पित -की ई सभटा मनगढ़ू बात नहि लागि रहल छइ? आबऽवला युग सभ मे क्यो विश्वास करतइ?

(भामती चुप रहइ छथि।)

...***(विह्वल होइत)*** हमरा लोकनिक भरण-पोषण कोना भेल?

भामती -सभटा कह`ब, मुदा आस्ते-आस्ते।

वाचस्पित -हमरा उत्कंठा कें शांत करू आहाँ!

भामती -अतेक शीघ्र? कोनो लाभ नहि हएत।

राज दिससँ अथक प्रयास भेल रहय अर्थ ग्रहण करबा लेल, मुदा हमरा नहि अरघल।

वाचस्पित -नीक कएल। हमर इज्जति राखि लेल अहाँ। अध्ययन आ लेखन तऽ हमर नितान्त ब्यक्तिगत साधना अछि। तें हम राजक अर्थ कहियो स्वीकार नहि कएल। ककरो सहायता तऽ नहि लेल?

भामती -एखन छोड़ू ई सब।

वाचस्पित -कारण?

भामती -एक तऽ सभटा एके संगे कहल पार नहि लागत। दोसर, शंका-पर शंका अहाँ कें ग्रसित कएने जाएत।

(भामती टहलऽ लगइ छथि। भामती पुनः ओतहि चलि अब छथि।)

...पढ़ब-लिखब छोड़ि आर किछु सुझबे नहि कएल अहाँ कें। अकेत तक जे खेनाइ-पिनाइ, नित्यकर्म, पूजा-पाठ सभटा बिसरि गेल छी। अहाँ अपन देह-दशा नहि देखइ छी! घर-दुआरि सेहो इएह अछि।

(वाचस्पति अपन देह निंघारि घर देखइ छथि। उठिकऽ भामती ल`ग जाइ छथि)

वाचस्पित -चलू बइसकऽ सविस्तार कहू हमरा।

(वाचस्पति अपन चौकी पर बइसइ छथि भामती नींचा मे बइसऽ लगइ छथि, मुदा वाचस्पति हाथ धऽकऽ उपर ओछाएन पर बइसबइ छथिन)

कतेक बर्ख भेल हएत विवाहक?

भामती -अनतीस बर्ख।

वाचस्पित -अयँ! उनतीस बर्ख! हमरा संग भरिसक हमर कान छल कऽ रहल अछि!... कतेक बर्खक रही अहाँ तहिया?

भामती -उनतीस बर्खक।

वाचस्पित -अर्थात बियालिस बर्खक छी अहाँ?

मुदा, मुदा, रूप-रंग सँ तऽ षोड़सी लगइ छी।

... केश तिलकि आयल अछि, तथापि ओहो रूप-लावण्य कें बढ़ाइये रहल अछि। लगैछ जेना सुरसरि हिमालयक वन्य-प्रदेश मे अनेक धारा मे विभाजित भऽ गेलि छथि।

(भामती लाजे गड़ल जाइ छथि)

...एना जे मूड़ी गोंतने रहबइ तऽ अपना कष्ट होयबे करत, संग-संग हमरो गप्प करऽ मे मोन नहि लागत।

(भामती किछु सहज होइ छथि तथापि मूड़ी नत छनि)

आश्चर्य ! एहेन रूप-लावण्य ल` कऽ अहाँ उनतीस बर्ख कोना कटलहुँ। हमरा बड़ अंधैर्य भऽ रहल अछि से सब सुनऽ लेल।

भामती -उनतीस बर्ख कें साबित करऽलेल हमरा कम सँ कम ओतेक बर्ख आर लागत। मुदा, तैयो ई नियमाक नहि जे सभटा अहाँक मोन स्वीकार कइये लेत। बहुत बात अहाँक विश्वास पर निर्भर कर`त।***(अङ्गुर सँ देखबैत)*** तत्काल आहाँक पोथी आ पाण्डुलिप प्रमाण-स्वरूप अछि।

वाचस्पित -*(अचंभित)* अहाँ पढ़लि-लिखलि सेहो छी?

भामती -बाबूक असीम कृपा रहनि। अहाँक संग तें जोड़ि देलनि जे सत्संग सँ आर पढ़ि-लिखि लेब।

वाचस्पित -जोड़ि देलनि?

भामती -माय नहि चाहथि जे हम बेसी पढ़ी-लिखी। अहाँ बाबूक मोन मे गड़ि गेल रहियनि।

(भामती चुप भऽ जाइत छथि।)

वाचस्पित -चुप्पी नहि लधियौ।

भामती -कतेक कहू, कतऽ सऽ कहू, नहि फुराइत अछि।

वाचस्पित -हमरा लेल सभ बात आरम्भे हएत। मुदा, अहाँक आरम्भ तऽ विवाह सँ हएत।

(अख्यास करबाक प्रयास मे भामती शून्य मे देखइ छथि)

... एतबे समयक परिचय मे होइये अहाँ किछु ने किछु कहैत रही, आ हम ओकरा हृदय मे उतारैत रही।

भामती -अहाँक मेधा आ पढ़ब-लिखब दऽ सुनि बाबू जीदिया गेल रहथिन।***(मूड़ी गोंति)*** सभ अहाँकें विशुद्ध बताह बूझय। माय तऽ हमरा ल`कऽ घर मे बिलैया ठोकि पेटकान द` देने रहइ।

वाचस्पति -तहन केहेन लागल रहय अहाँकें?

भामती -लोकक बात नहि सोहाय।

वाचस्पति -एकटा बताह लेल?

भामती -बाबू पर अडिग विश्वास रहय। होअय पढ़ब-लिखब खूब।

वाचस्पति -तैयो हमरा सँ विवाह करबाक मोन भेल रहय?

भामती -बहुत पहिनहि सँ बाबू अहाँक चर्च करथिन। ता अहाँक चर्च बहुत होबऽ लागल रहय।

वाचस्पति -तहन केहेन लागय?

भामती -अहाँ संग निमाहबाक बात सोचऽ लगियै।

वाचस्पति -हमरा संग निमाहऽ लेल अतेक सोचऽ पड़ल रहय?

भामती -से अहाँक मेधा आ लग्न दऽ सुनि होअय। भगवती कहुना निमाहलनि।

वाचस्पित -अहाँ तऽ स्वयं भगवती छी।

भामती -कोन ग्रंथकार एना डूबल रहलाह अछि? अहाँ तऽ स्वयं शंकरक अवतार छी।

(वाचस्पति अन्यत्र देखऽ लगइ छथि। मुँह कारुणिक भऽ उठइ छनि।)

...की सोचऽ लगलियै?

वाचस्पति -हम जहन एहेन रही, तऽ नहि जानि माय-बाबू कियेक विवाह करौलनि !

भामती -अहाँकें लौकिक बनयबाक रहनि।

(वाचस्पति उठिकऽ टहलऽ लगइ छथि। भामती ठाढ़ि भऽ हुनका देखि रहलि छथि। वाचस्पति

भामती ल`ग चलि अबइ छथि।)

...अहाँक माय-बाबू कें होनि, हमरा कतऽ कऽ राखथि कतऽ ने। पहाड़ तऽ तहिया टूटि पड़ल हमरा पर जहिया ओ लोकनि उठि गेलाह। (ग`रा-बकौर लागि जाइ छनि) नैहर जाएब सकसीहन भऽ गेल !

वाचस्पति -से कियेक?

भामती -घर आ फेर अहाँक तकतियान के करितय?

वाचस्पति -दुरागमनक बाद साफे नहि गेलियै?

भामती -बाबूक श्राद्ध मे गेल रहियनि।

वाचस्पति -भाय नहि अबइ छथि?

भामती -जड़ल-भूजल एकटा हमही भेलियनि।

वाचस्पति -अर्थात् उजड़ल-पुजड़ल देखऽ लेल हमहीं बाँकी छी !... अहाँक नाओं की अछि?

भामती -भामती।

(वाचस्पति कलबल भामतीक हाथ पकड़ि लइ छथिन। भामती सिहरि उठइ छथि।)

वाचस्पति -हम लौकिक नहि बनि सकलहुँ ! बाछी बध करबाक पाप हमरा लागत !

भामती -*(वाचस्पतिक मुँह पर हाथ धऽ)* एहेन पाप नहि दीअ हमरा। जन्म-जन्मक तपस्याक फल अछि जे अहाँ भेटलहुँ अछि।

वाचस्पति -अहाँसन भार्या ओहिना भेटि जाइ छइ?

... जखन दीप झिलमिलाय लागल रहय, ताहि सँ पूर्व हम त्रिशुलधारी शंकर कें बसहा संग ठाढ़ भेल हँसैत देखैत रहियनि। अनायास हुनकर त्रिशुल जगदम्बा मे परिणत भऽ गेलनि आ वसहा बाघक रूप पकड़ि लेलकनि। तखन शंकर ओतऽ नहि छलाह। भगवती हमरा आशीर्वाद दैत ठाढ़ि छलीह। दीप मिझयलाक बाद अहाँ दीप बारने उपस्थित भेलहुँ। आबो अहाँकें भगवती नहि मानू?

भामती -स्वयं भगवती पार्वती रूप मे शंकर कें प्राप्त करबा लेल कतेक तपस्या कयने छलीह?

वाचस्पति -भामा ! हम पहिनहि सभ तरहे परास्त छी। अहाँकें पाबि हम धन्य छी। अहाँ कें पाबि हम आइ पूर्ण भेलहुँ अछि !

(दुनू गोटे आलिंगनबद्ध होइ छथि। संगीतक ध्वनि प्रवाहित होइछ। क्षणभरि बाद संगीतक संग-संग चिड़ै-चुनमुनीक शब्द गोचर होइछ।

दुनू फराक होइ छथि। संग-संग प्रकाशांत होइछ)

■

दृश्य :

(खुशीक मारे भामती चंचल भऽ गेलि छथि। घूमि-घूमि गीत गुनगुना रहलि छथि। शाम्भवी धुरखुर लागलि सुनि रहलि छथि। शाम्भवी घर मे मुँह पर आबि ठाढ़ि भऽ जाइ छथि। दुनू एक-दोसर कें मुस्किआइत देखइ छथि। किनको बकार नहि फुजइ छनि। भामती शाम्भवी सँ लेपटा जाइ छथि। दुनूक आँखि नोरा जाइ छनि।)

शाम्भवी -आइ बजलथुन्हें तऽ?

(खुशी आबेश मे भामतीक बकार नहि खुजइ छनि।)

...आइ भोरे-भोरे सभतरि हुनके चर्च भऽ रहल छनि। चकुआ-चकुआ तकइ छथिन अनचिन्हार जेकाँ। बहुत कें टोकबो केलथिन्हें। आइ तऽ मूड़ी नत क'कऽ चलिते नहि छथिन। विश्वास नहि भेलए तऽ दौड़लि एलहुँहें एतऽ।

(फराक भऽ भामतीक दुनू पाँखुर पकड़िकऽ हुनका आँखि मे मुस्किआइत देखइ छथि।)

...नीक जेकाँ बजलथुन्हें तऽ?

(भामती फेर शाम्भवी संग लेपटा जाइ छथि।)

भामती -आबऽ दहुन ने। अपने देख लियहुन।

शाम्भवी -हय, कहऽ ने अपना मुँह सँ ! मोन बेकल अछि!

भामती -*(फराक होइत)* हुनके सँ पुछि लियहून।

शाम्भवी -से तों हमर अधिकार लऽ लेबऽ? तेहेन टिका-टिका कहबनि से सुनिये लीहऽ तों। मुदा, आइ भरि नहि। आइ मात्र तोरे सँ सूनब।

(भामती मुस्किया रहलि छथि। दुनू गोटे चौकी पर बइस जाइ छथि।)

...आइ हम एकटा सपना देखऽलियैये। तों आँचर ओरने बड़का कनैल गाछ त`र ठाढ़ि छह। बड़ीकाल तक आँचर ओरने तों ठाढ़ि रहइ छह, मुदा एकहूटा फूल तोरा आँचर मे नहि खसइ छह। तों कानऽ लगइ छह। तखने एकटा दिब्या मुस्किआइत अबइ छथि आ फूल तोड़ि-तोड़ि तोरा आँचर मे देबऽ लगइ छथुन। तों मुस्किआय लगइ छह। दिब्या तोरा आशीर्वाद दऽ चलि जाइ छथि।

(भामती खुशीक नोर बहबैत शाम्भवी कें देखि रहलि छथि।)

...मुस्किआइत भामतीक कान्ह पर हाथ धऽ हय पहिने तों कि ओ?

भामती -तोरा अपना की बुझाइ छह?

शाम्भवी -तैयो।

भामती -तऽ हम अतेक दिन बैसलि रहितहुँ?

शाम्भवी -हय, हमरा अखनो अपना कान पर बिश्वास नहि भऽ

रहल अछि, जाधरि आँखि सँ देख नहि लइ छियनि।

भामती -से तऽ हमरा अपनो सपना जेकाँ लागि रहल अछि एखन तक।

शाम्भवी -एहेन बात शुत्रओं कें सपना नहि होइक। केहेन छथुन हय?

भामती *-एतबे मे कोना कहियऽ। (अगुताइत) देखहक ने, एखन तक बाढ़नियों नहि पड़लइये घर मे।*

(शाम्भवी फेंट बन्हइ छथि।)

शाम्भवी -तों जा पूजा-पाठक ओरियान कऽ दहुन गऽ, आ स्नान सेहो कऽ लएह। हम एम्हर सम्हारि दइ छियह।

(शाम्भवी चौकी त`र सँ बाढ़नि लऽ घर बहारऽ लगइ छथि। भामती दोसर घर जाइ छथि।)

(क्षणभरि बाद वाचस्पति हाथ मे लोटा, कान्ह पर भीजल धोती आ गमछा रखने प्रवेश करइ छथि। शाम्भवी कें देखि अचंभित घर`क मुँह पर ठाढ़ भऽ जाइ छथि।)

भामती -जोगीराज, की देखइ छिअइ? रातिवाली नहि छी हम, सएह ने? प्रेतात्मा कें रूप बदलऽ अबइ छइ। *(मुस्किआइत हाथ बढ़बैत)* देखू-देखू, हमरा छूबिकऽ!

(वाचस्पति के अकबक किछु नहि फुराइ छनि।)

...*(उच्च स्वर मे)* हय सखी, आबऽ जल्दी। जोगीराज भरमा रहल छथुन।

(ओहि घर सँ भामती आबिकऽ वाचस्पति सँ धोती-गमछा लऽ असगनी पर पसारऽ जाइ छथि। वाचस्पति पूर्ववत ठाढ़ छथि। भामती हुनका ल`ग आबि जाइ छथि।)

भामती -इएह छथि हमर सखी शाम्भवी। हिनके बड़ जोर रहनि विवाह मे। जैं ई, तैं हम निमाहि पौलहुँ अहाँक अनुपस्थिति मे।

शाम्भवी -हे जोगीराज, सुनि लिअ। हम एतुक्का संबंध भावहु-भैंसुरवला नहि राखब। देयादी संबंध बड़ मरखाह होइ छइ। गंगा शिवक माथ पर छथिन, से जानल अछि ने? **स्पष्ट वक्ता न वंचकः**। अपन स्थान नहि छोड़ब।

(वाचस्पति मुस्किया रहल छथि। अपन मुस्की दाबऽ लेल शाम्भवी मुँह घुमा लइ छथि।)

वाचस्पति -हमर सौभाग्य जे अहाँ हमरा माँथ पर बैसब। मुदा, अहाँक भार सहबाक सामर्थ हमरा मे नहि अछि।

शाम्भवी -से तऽ फरिछा लेब पाछू। ओहि घर जाउ। पूजाक ओरियान-पात भेल अछि।

(वाचस्पति ओहि घर जाय लगइ छथि।)

...एकटा आर बात।

(वाचस्पति ठमकि जाइ छथि।)

...आब घर`क सभ काज अहाँके सम्हारऽ पड़त। आब

हमर सखी लिखऽ बैसत। ओकरा आजीगुजी नहि बुझियौ।

(वाचस्पति मुस्किआइत ओहि घर जाइ छथि।)

भामती -*(मुस्किआइत)* तोरा साहसक बलिहारी।

शाम्भवी -स्त्रीक माया बुझले कहाँ छनि। अपन भाभट नहि पसारबह तऽ फेर ने कहूँ डूबि जाथुन, हमरा तकर डर होइत अछि।

(भामती नूआ लऽ कोचियबैत बाहर होइ छथि। दोसर घर सँ भामा ! भामा !` सुनल जाइछ।)

शाम्भवी -आब बेस अनुराग चुबइ छनि भामा लेल !

(हाथ बारि कने उच्च स्वर मे)

...नहाए गेलीहए !

भामती -*(घर`क मुँह पर आबि)* शोर पाड़लथिन्हें?

(शाम्भवी मुस्किआइत पहिने नकारात्मक फेर सकारात्मक मूड़ी डोलबइ छथि।)

शाम्भवी -जल्दी सँ एक लोटा पानि ढारिकऽ आबऽ, नहि तऽ एखने फेर चिचियेथुन।

(उत्फुल्लमना भामती अदृश्य होइ छथि। शाम्भवी खुशीक हिलकोर मे भसिआएल, बेशुध भेलि बाढ़नि थम्हने ठाढ़ि रहइ छथि।)

प्रकाशांत



तेसर अंक

मंच सज्जा :-

ओएह घर। घर`क स्थितिमे किंचित सुधार, किन्तु पहिल अंकसँ बढ़िया नहि। वाचस्पति आ भामती साधारण किन्तु सुरुचिपूर्ण वस्त्रमे। वाचस्पतिक केश छोट; दाढ़ी कमाएल।

सभटा मिला-जुलाकऽ लौकिक एवं सभ्य रंग-ढंग।

दृश्य :

(इजोतक संग-संग देखल जाइछ जे भामती उत्फुल्लमना टहलैत करचीक कलम बना रहलि छथि। वाचस्पति बाहरसँ आबि चुपचाप टाटसँ ओङठिकऽ बैस रहइ छथि। वाचस्पतिकें मन्हुआएल देखि भामती क्षणभरि हुनका देखइ छथि आ कलवल हुनका लगमे बैसिकऽ पुछइ छथिन।)

भामती -की भेलए?

वाचस्पति -जूड़ब, रूचब, पचब-तीनू ककरो-ककरो होइ छइ !

भामती -फेर ई नव बात कतऽसँ आएल दिमागि मे? अहाँ लोकक बात सुनइ छी, तें बेतुकक बातमे दिमागि ओंझरा जाइत अछि। हम तँ कहब जे पोथी शेष क`कऽ सोझे राजदरबारमे जा कऽ बैसल करू।

वाचस्पति -सत्यसँ हम कहाँधरि पलायन करब? हमरा जूड़ल,

मुदा रूचबे नहि कएल। आ जखन रूचबे नहि कएल तँ पचबाक प्रश्ने कहाँ उठइ छइ?

(हाथक कलम आ छूरी भामती बगलमे रखइ छथि आ वाचस्पतिक हाथ पकड़ि कहइ छथिन।)

भामती -एना नहि सोची। नहि तऽ आहाँक रचनात्मक क्षमता क्षीण भऽ जाएत।

वाचस्पति -*(भामतीकें अपलक देखैत)* अहाँकें तोष देबऽलेल हम बात बना सकइ छी। ताहि सँ हमर अन्याय कम भऽ जाएत?

(भामती किछु बाजऽ चाहइ छथि, मुदा वाचस्पति मना करइ छथिन।)

...आब मात्र हमरा बाजऽ दीअ। बाजिकऽ किछुओ आत्मसंतोष कऽ लेबऽ दीअ ! सभटा अछैत हमरा किछु नहि अछि ! माय-बाप, सासु-ससुर सभकें हम गिरि गेलहुँ ! एतऽ तक जे अहाँकें घरहिमे वनबास दऽ देलहुँ हम! अहाँ तँ साक्षात् सीता छी, मुदा अहाँकें राम नहि भेटलाह ! तथापि, कहाँ सीता चौदह बर्ख सभ शक्ति-आयुधसँ युक्त ! कहाँ अहाँ एकसरि निहत्था उनतीस बर्खक युद्धमे अपराजिता रहलहुँ!

(वाचस्पतिकें गर-बकौर लागि जाइ छनि।)

भामती -*(द्रवित स्वर)* कम-सँ-कम हमरा लेल ई सभ बिसरि

जाउ ! *(वाचस्पतिक हाथ पकड़िकऽ उठैत)* चलू, अपना काजमे लागि जाउ। तहन अलाय-बलाय मोनमे नहि आएत।

(दुनू गोटे उठिकऽ टहलइ छथि।)

वाचस्पति -हँ, ठीक कहलहुँ अछि, बिसरि जयबा लेल एकटा स्वांग रचब, सएह ने? मुदा, हृदयकें मनबऽ लेल कोन स्वांग रचू?

भामती -*(रुकिकऽ)* अहाँक सोचब यथार्थ अछि, तथापि जाहिसँ किछु होना-जाना नहि तकरा त्यागने उचित। देखियौ एम्हर। *(दर्शककें देखबैत)* जे समाज आइ अहाँकें दूसि रहल अछि, काल्हि प्रशंसा करैत अघाएत नहि। नीक कार्यमे एना होइ छइ।

वाचस्पति -नहि, हम प्रशंसाक पात्र भइये नहि सकइ छी। जे अपन घर नहि डेबि सकल, जे अपन सर-कुटुम्बकें नहि चिन्हलक, तकर गणना मनुखमे कोना हेतइ?

(वाचस्पति अपना बैसार दिस अपलक देखऽ लगइ छथि।)

भामती -जाउ, अहाँ अपना काजमे लागि जाउ।

वाचस्पति -हँ हँ, अबस्स !

(क्रोधसँ तमतमाइत अपना बैसार तक जाइ छथि। हाँइ-हाँइ लिखलाहा गेट सभकें पंजिया लइ छथि।

भामती तुरंत लपकिकऽ हुनकर दुनू टांग छानि लइ छथिन।)

...जाहि कारण हम कतहुकें नहि रहलहुँ से हम किन्नहु नहि राखि सकइ छी।

(जोर लगबैत) छोड़ि दीअ हमरा !

भामती -एहिपर अहाँक कोनो अधिकार नहि अछि ! पूर्वरचित ग्रन्थक मादे हम किछु नहि कहब। पुरुषार्थ देखाबहेक अछि तँ हमरापर देखाउ !

(भामतीक गछारसँ मुक्ति पयबामे वाचस्पति अपनाकें असमर्थ पाबि रहलि छथि।)

...मात्र लिखि लेने अहाँक भऽ गेल? हम अपन सभटा उत्सर्ग कऽ देल एहि लेल। एकरा फेकिकऽ घुरा देब हमर सभटा?

(वाचस्पतिक पाँज सँ पत्र सभ ससरऽ लगइ छनि। किंकर्त्तव्यविमूढ़ वाचस्पति ठाढ़ रहइ छथि। भामती हिचकैत पत्र सभकें बीछऽ लगइ छथि।)

भामती -*(पत्रक गेंटकें देखैत)* देखइ छीही ! मायकें कतेक भोगऽ पड़इ छइ सन्तान लेल ! बापकें बाप कहयबाक सख होइ छइ आ मायकें सन्तान लेल सभ किछु उत्सर्ग करबाक तत्परता !

(भामती गेंट पूर्ववत यथास्थान रखइ छथि। आबिकऽ वाचस्पतिक हाथ पकड़ि कहइ छथिन।)

...चलू, मोन थिर करू गऽ। जे अहाँकें अछि से

बिरलेकर्के होइ छइ। अहाँसन जूड़ब, रूचब आ पचब तँ कोनो युगमे संयोगेसँ ककरो भऽ जाइ छइ !

वाचस्पति -हमर पूर्व रचना सभ अहाँक नहि अछि?

भामती -*(मुस्किआइत)* तऽ ओकर सभक प्रतिलिपि किएक रखितहुँ? पूर्वरचित ग्रन्थ सभक पाण्डुलिपि तँ राजदरवारमे सुरक्षित अछि। एकर प्रतिलिपि रहने हम किछु नहि कहलहुँ। एहि ग्रन्थक रचना अहाँ हमरा समक्षमे कऽ रहल छी।

(वाचस्पति भामतीकें अपलक देखइ छथि।)

वाचस्पति -सत्ते, एकटा जघन्य भूल करबा सँ अहाँ हमरा बचा लेलहुँ। अहाँक मेधाक समक्ष हम अपनाकें अति लघु अनुभव कऽ रहल छी।

भामती -हमर बड़ाइ अहाँ नहि करब तँ कें करत?

अहाँकें संतानक चिन्ता अछि। एहेन संतान कतेक कें होइ छइ?

वाचस्पति -सभ किछु अछैत हमरा किछु नहि अछि ! एहि संतानसँ तर्पण तँ नहि भऽ सकत। हमर जिनगी अकारथ बीति गेल!

भामती -युग-युग तक अहाँक चर्च होइत रहत। एहेन तर्पण कतेक लोककें होइ छइ? (हाथ पकड़ि) चलू, पहिने मोन थिर करू।

(भामती हुनकर हाथ पकड़ने चौकीपर बइसइ छथि।)

- प्रकाशांत -

दृश्य :

(भामती साग काटि रहलि छथि। वाचस्पति एकटा नूआ आ आंगी नेने प्रवेश करइ छथि। भामती से तरे आँखिये देखि लइ छथि, तथापि साग काटबामे व्यस्त रहइ छथि।)

वाचस्पति -(लगमे बैसिकऽ) देखियौ एम्हर।

(भामती नजरि उठाकऽ देखि लइ छथि।)

... पसिन्न नहि पड़ल की?

भामती -कहइबी बेजाय नहि छइ। ऋणिया बहु कें झुम्मक ! दूटा तँ आनिए देलियै ओहि दिन।

वाचस्पति -अच्छा कहू तऽ, गरीब लोककें मनोरथ नहि होइ छइ?

भामती -अनने तऽ हेबइ पैंचे-पालट कऽ कऽ?

वाचस्पति -हद भऽ गेल ! तकर चिन्ता अहाँकें किएक अछि? आब अहाँ हमरापर छी।

भामती -कहिया नहि छलौं हम अहाँपर? अहाँ बिनु हमरा कें चीन्हत? ***(हाँसू एकात कऽ रखैत)*** हमरा सजने-धजने ग्रन्थ पूरा भऽ जाएत? ***(साग समटैत)*** हमरा अखरकट्टू नीक नहि लगैत अछि।

(सागक मौनी आ हाँसू लऽ कऽ उठइ छथि।)

(जाइत-जाइत) साफे अनठा देलियै लिखनाइ।

(वाचस्पति पाछु लागल जाइ छथि। भामती हाँसू चौकी तरमे राखि मौनी नेने ठाढ़ि भऽ जाइ छथि)

वाचस्पति -ईहो तऽ आवश्यक छइ।

भामती -घरमे नहि देखल जाइ छइ।

वाचस्पति -*(एक हाथमे भामतीकें पजियबैत)* भगवान तऽ साइते-संयोग ककरो अपना हाथे गढ़इ छथिन। देखनहुतकें सजबऽमे आर मोन लगइ छइ।

भामती -*(मुस्की दाबैत)* ग`र मे घेघ छी, तऽ फेकब कोना?... कोना की जोगार केलियै?

वाचस्पति -बुझा देब कखनो चैनसँ।

भामती -सभ तऽ चाहत जे घराड़ियो बिका जाय।

जे दू-चारि कट्ठा जमीन छल, श्राद्धकर्म आ हमरा पेटमे चलि गेल।

वाचस्पति -*(नूआ दैत)* पछिला बात तहियबैत चलू। जाउ, पहिने नूआ पहिरकऽ आउ गऽ। इच्छा होइये अइ साड़ी मे अहाँकें देखबाक।

भामती -*(नूआ ल`कऽ मुस्किआइत)* अहाँ बड़ केहेनदन लोक छी। लक्षण नीक नहि लगैत अछि। झोंकाह छी अहाँ।

(भामती नूआ लऽ ओहि घर जाइ छथि। वाचस्पति

उत्फुल्ल मंचपर टहलि रहल छथि। शाम्भवी घर`क मुँहपर देखल जाइ छथि।)

शाम्भवी -जोगीराज ! सखी कहाँ छथि?

वाचस्पति -घरेमे छथि। आउ ने।

शाम्भवी -*(मुँहेपर घरमे)* जोगीराज ! **ब्रह्म सत्य, जगं मिथ्या। ब्रह्म सत्य जगं सत्य। दुनू सत्य अथवा दुनू मिथ्या।...** *(दुनू हाथ बान्हिकऽ टहलैत)* हमरा कने बुझा दीअ जे अतेक मंथन कयलाक बाद की भेटल अहाँकें?

वाचस्पति -जे भेटल ताहि ध`कऽ आब छी।

(भामती नव नूआ आ आंगीमे दोसर घर सँ अबइ छथि।)

शाम्भवी -इएह ! कहलियै ने अमूल्य वस्तु ! अहाँक गुरुदेव जिद्दी रहथि। हारब तऽ हारब, मुदा खुट्टा एतहि गारब। *(भामती सँ)* हम ओहिना आएल रही।

भामती -कनिएँ बैसऽ ने।

वाचस्पति -हँ हँ, कनिएँ बैसू ने।

शाम्भवी -*(वाचस्पतिसँ)* से जे इच्छा रहैत तऽ पहिनहि बैसऽ कहने रहितहुँ। तथपि हमरा दुख नहि अछि। पूर्ण एहिलौकिक बनऽमे देरी अछि एखन अहाँकें।

महाराजक दूत घरक मुँहपर उपस्थित होइछ।

ओ झुकिकऽ वाचस्पतिकें प्रणाम करैछ।)

दूत -प्रणाम् देव !

वाचस्पति -कहू, महाराज नीके छथि?

दूत -पूर्ण स्वस्थ छथि। अपनेक लौकिकता दऽ सुनि महाराज अपनेक दर्शनार्थ अति व्याकुल भऽ उठल छथि। हुनका विश्वास नहि भऽ रहल छनि।

वाचस्पति -हम स्वयं अति आतुर छी। महाराजसँ हमर निवेदन कहबनि, जँ अतेक बर्ख, तें किछु दिनक मोहलति आर देथि। हम स्वयं हुनका सेवामे उपस्थित होएबनि!

शाम्भवी -दूत ! महाराजकें हिनकर लौकिकताक संबंधमे की सूनऽमे एलनिहएँ?

दूत -*(धुकचुकाइत)* यैह जे आब..।

वाचस्पति -निर्भय भऽकऽ बाजू।

दूत -मात्र महाराज नहि, सभठाम चर्च अछि जे आब अपने सभसँ गप्प-सप्प करइ छिअइ अर्थात् आब अपने मात्र अपनेमे हेराएल नहि रहइ छिअइ। सरकार ! से तऽ देखिये रहल छी हम स्वयं।

(वाचस्पति, भामती आ शाम्भवीकें मुस्की आबि जाइ छनि। दूत प्रणाम् कऽ चलि दैछ।)

शाम्भवी -*(मुस्किआइत)* जोगीराज ! अहूँके नव-नव परिचय

करऽ अबैत अछि। की सत्य, की असत्य से अवस्स बुझैत हेबइ आब?

वाचस्पति -दुनू मिलाकऽ पूर्ण होइछ आ सएह सत्य।

शाम्भवी -धन्यवाद ! ***(भामतीसँ) चलइ छी।***

(मुस्किआइत) जोगीराजकें पसिन्न करऽ अबइ छनि।

(शाम्भवी बाहर भऽ जाइ छथि।)

भामती -ग्रन्थ जल्दी शेष कऽ लेबाक अछि। महाराजक अतेक अवहेलना कल्याणकारी नहि।

वाचस्पति -अहाँक परामर्श हम स्वीकार करइ छी। तहन चिंता नहि। महाराज बड़ सहृदय लोक छथि।

भामती -तें शीघ्रातिशीघ्र हुनकर इच्छाक पूर्ति होएबाक चाही ने?

वाचस्पति -हँ, शंकर भाष्यक टीका सरल सँ सरल हुनकर इच्छा छनि आ से भार ओ हमरा देलनि। नहि जानि, एहि दीर्घ समयमे शंकर भाष्यक टीका भेलैये कि नहि।

भामती -से जे भेल रहितइ तऽ महाराज अतेक व्याकुल किएक होइतथि? आहाँ पर आसीम श्रद्धा आ विश्वास छनि।

वाचस्पति -किछु नियामक कहनाइ असम्भव अछि। अच्छा, छोड़ू ई तर्क-वितर्क एखन।

भामती -अहाँ बैसू। हम जलखै नेने अबइ छी। *(वाचस्पति*

आसनपर बैसि जाइ छथि। भामती छिपली मे जलखै नेने प्रवेश करइ छथि।

वाचस्पति छिपली दिस बिनु देखनहि कौर दऽ रहल छथि। नजरि भामतीपर छनि। भामती किछु सोचैत अन्यत्र देखि रहलि छथि। चूराक 'कट-कट्' पर धेआन भंग होइ छनि।)

...सानिकऽ खइयौ ने !

वाचस्पति -*(दही-चूड़ा सनैत)* बस, भऽ गेलइ आब।

(हाँइ-हाँइ दू कौर मुँहमे रखइ छथि।)

भामती -सभटा अछिये ओहिना।

वाचस्पति -भऽ गेलइ आब।

(गट-गट पानि पीबिकऽ उठि जाइ छथि। बाहर जाकऽ हाथ धोइ छथि।)

भामती -*(खूटसँ सुपारी दैत)*, कनिको सोह अछि जे कतेक मास सँ लिखब बन्न अछि?

वाचस्पति -*(पंजियबैत)* छैहे आब कतेक जे...।

भामती -तपस्याक अंतिम फल अछि।

वाचस्पति -दाढ़ी पकड़ि, सभटा भामाक तपस्याक फल छनि। *(भामती कें पंजिया लइ छथिन)*

भामती -जौं हमर विवाह अहाँ संग नहि भेल रहितय?

वाचस्पति -जौं हमर अहाँक जन्मे नहि भेल रहितय?

(भामतीक आँखिमे देखैत) व्यवहार कुशल होइतहुँ, अहाँ एहेन स्तित्वहीन बात किएक कहइ छी?

भामती -*(मुस्किआइत)* आब अहीं कहू जे ई जग झूठ कि सत्य?

वाचस्पति -जग अभावमे ब्रह्मक स्तित्वक अनुभव असम्भव। छोड़ू एहि तर्क-वितर्ककें। हमरा लोकनि कें रचनाधर्मिता दिस उन्मुख रहबाक अछि।

भामती -*(अपनाकें मुक्त करैत)* बहुत काज पड़ल अछि। आइये एगोटेकें सीकीक धुथरी देबाक अछि। चटिया सभ अबिते हेथिन।

वाचस्पति -*(पुनः पकड़ैत)* ई सभ करबाक आब प्रयोजने की अछि? लोक कूट-काट करैत रहैत अछि।

भामती -लोक बाँकिये की रखने अछि?

(तमतमाइत अन्यत्र देखऽ लगइ छथि।)

वाचस्पति -तमसा गेलियै?

भामती -*(फराक होइत)* सभटा अपनापर कियेक लऽ लइ छिअइ?

...तहन, एकटा बात कहब जे आबो अहाँकें हमर चिन्ता नहि अछि! लोककें अवसर दऽ रहल छियै, तऽ लोक हँसबे करत।

वाचस्पति -लोक माने भेलइ भेड़ियाधसान। लोक अहिना उपहास करइ छइ।

(भामती कें पुनः अंकपाशमे लऽ लइ छथि।)

भामती -बस, भऽ गेल ! एकटा छिच्छा भऽ गेल छी हम। हम कत्तौ पड़ाएल जाइ छी?

(भामती मुक्त भऽ सीकीक धुथरी आ टाकु लऽ बूनऽ लेल प्रस्तुत होइ छथि।)

वाचस्पति -*(सहमल लगमे जाकऽ)* हमरा ललकारि रहलि छी अहाँ? कहू, कथीक प्रयोजन अछि?

(भामती हाथ बारि क्षणभरि अपलक वाचस्पतिकें देखइ छथि। धुथरी टाकु राखि ठाढ़ि भऽ जाइ छथि।

भामती -*(मुस्कि आइत)* सम्प्रति एकेटा वस्तुक प्रयोजन अछि।... देब?

(वाचस्पति चुप छथि।)

...ग्रन्थ पूर्ण कऽ लिअ।

वाचस्पति -ग्रन्थ ! ग्रन्थ ! ग्रन्थ ! जिनगी भरि तऽ लिखिते रहलहुँ।

(भामतीकें पंजिया लइ छथि।)

...अहाँ प्रसन्न रहू। सभटा भऽ जेतइ।

(भामतीकें कोरा मे लऽ कऽ ओहि घर जाइ छथि।)

- प्रकाशांत -

दृश्य :

[प्रकाश वृत्तमे भामती सिबिया कऽ रहलि छथि। वाचस्पति अपना स्थान पर लिखऽ लेल उद्यत छथि, मोनमे मुदा ढुकि नहि रहल छनि। रहि-रहिकऽ भामती दिस देखइ छथि।

आब एकटक भामतीकें देखऽ लगइ छथि। आबिकऽ भामतीक लगमे ठाढ़ भऽ जाइ छथि, से आभास भामतीकें भऽ जाइ छनि।]

भामती -*(सीबियामे लागलि)* हमही काल छी, से बुझा गेल (दाँतसँ सूत काटि) अतिशीघ्र कात लागि जाएब !

(मंच पर पूर्ण प्रकाश होइछ)

वाचस्पति -*(लगमे बइसैत)* एना कियैक बजइ छिअइ?

भामती -बाजऽ लेल अहाँ बाध्य कऽ रहल छी। *(शून्यमे देखैत हाथपर हाथ धऽ)* ओह, होइये, कतौ पड़ा जाइ !

वाचस्पति -कतऽ? नैहर?

भामती -जड़ल-भूजल नैहरमें अछिये के जे...!

वाचस्पति -पड़ा गेने शांति भेटत? हमहीं चलि जाइ छी कतौ।

(भामती उठि जाइ छथि। संग-संग वाचस्पति सेहो उठि जाइ छथि)

भामती -*(आङुरसँ देखबैते)* आ ओकर की हेतइ?

....बाधा तऽ हमही छी। हमरा नहि रहने अहाँक मोन

थिर रहत आ तैखन ग्रन्थ पूर्ण होएत।

वाचस्पति -आश्चर्य !

भामती -कथी आश्चर्य ?

वाचस्पति -अहाँक सोचब। अहाँक बूझब। पड़ाकऽ अहाँ जायब कतऽ !

भामती -कियेक ? संसारक इनार-पोखरि सुखा नहि गेलैये।

वाचस्पति -स्त्री-धर्म इएह छइ?

भामती -तऽ मात्र पशु-वृत्ति स्त्री धर्म छइ?

(वाचस्पति चुपचाप अपना स्थान पर आबिकऽ बैसि रहइ छथि। भामती दोसर घर जाइ छथि।)

वाचस्पति -*(कने जोर सँ)* कने पानि देब? पिआस लागल अछि।

(कोनो तरहक उत्तर नहि अबैछ। क्षणभरि मे भामती एक लोटा जल ल`कऽ अबइ छथि। भामती जाय लगइ छथि कि वाचस्पति हाथ पकड़ि लइ छथिन।)

... एतहि बैसू। अहाँ तऽ हमर प्रेरणा छी।

भामती -पानि पीबू पहिने।

(वाचस्पतिक टकटकी नजरि भामती पर छनि।)

पानि लोटा मे छइ।

(वाचस्पति दू-तीन घोंट जल गटकि कऽ लोटा नीचा मे रखइ छथि।)

..*(बिहुँसैत)* हमहीं छीं प्रेरणा तऽ लिअ, *(पलथी*

मारिकऽ बइसैत) हम एतइ बैसइ छी।

(भामती जमिकऽ बैसि रहइ छथि। वाचस्पति लिखबाक पूर्ण स्वांग रचि रहल छथि, मुदा ओरिया नहि रहल छनि. भामती कें हँसी लागि रहल छनि।)

..*(लग मे सटैत)* देखू, बात बनयला सँ पकड़ा जाइ छी। धेआन देला सँ कहिया ने भऽ गेल रहैत।

वाचस्पित -*(खिसिआइत)* ई दालि-भात रान्हब नहि छइ !

(भामती अप्रतीभ भऽ जाइ छथि। चुपचाप उठिकऽ चौकी ल`ग ओछाएल अपना पटिया पर चलि जाइ छथि, आ निघुरिकऽ वृत्त प्रकाश मे चित्र पारऽ लगइ छथि। वाचस्पति किछु काल बैसल सोचैत रहि जाइ छथि। उठिकऽ टहलइ छथि आ प्रकाश बृत्तक बाहर सँ भामतीक चित्रकला देखैत ठाढ़ भेल छथि। प्रकाश-बृत्तक बाहरे मे बइस जाइ छथि जकर भान भामती कें भऽ जाइ छनि।)

वाचस्पति -रूसले रहबइ? हमर दोष?

भामती -*(कागत पर झूकल)* हमर कप्पार।

वाचस्पति -मुदा, हम तऽ बड़कीटा कपारवला छी अहाँकें पाबिकऽ।

भामती -वचनं किं दरिद्रता !

वाचस्पति -हमरा अछिये की?

भामती -जएह अछि, सएह देब? *(सोझ भऽ)* हमर मुँहबजाइ

बाँकिये अछि।

वाचस्पति -जखन हमहीं आहाँक छी, तखन बाँकिये की रहल?

भामती -फुसियाही बात। पुरुष बड़ स्वार्थी होइत अछि।

(भामती उठि जाइ छथि। संग-संग वाचस्पति सेहो उठि जाइ छथि।)

(मंच पर पूर्ण प्रकाश)

वाचस्पति -जखन इएह, तऽ जाँचि लिय।

(आँखि मे तकैत) पछताएब तऽ नहि?

(हाथ बान्हि टहलइ छथि। वाचस्पति यथास्थान ठाढ़ छथि। भामती घूरिकऽ फेर लग आबि जाइ छथि।)

...पाछू फेरब तऽ नहि बात?

(वाचस्पति मुँह देखैत ठाढ़ छथि।)

सोचऽ लागि गेलौं ने?

वाचस्पति -देल बस्तु लेल सोचब कियेक? भेद तऽ एतबे हेतइ जे ओ बस्तु घर`क एहि कोन्ह सँ ओहि कोन्ह मे रखा जेतइ।

भामती -एक सत्त, दोसर सत्त, तेसर सत्त?

वाचस्पति -सत्ते सत्त !

भामती -ग्रंथ पूर्ण क`कऽ दीअ हमरा।

वाचस्पति -ओ तऽ अहींक अछि।

(वाचस्पति भामती कें अंक मे लेबऽ चाहइत छथि, मुदा भामती दूर भऽ जाइ छथि।)

भामती -ऊँहू ! पहिने मुँह बजाइ।

(वाचस्पति चुप छथि।)

मुँह बजाइ नहि देब? आब बँकियौता बेसी दिन नहि चल`त।

(भामती ओहि घर जा बिलैया ठोकि लइ छथि।)

प्रकाशांत

■

दृश्य :

[प्रकाश बृत्त मे भामती सूतल छथि। वाचस्पति अपना स्थान पर लिखबाक स्वांग भरने बैसल छथि। रहि-रहि भामती दिस ताकऽ लगइ छथि। कनेकाल बाद एकटक भामती दिस ताकऽ लगइ छथि।

गओं सँ आबि भामती ल`ग ठाढ़ होइ छथि। भामती कें देखइ छथि। गओं सँ भामतीक पाँजर मे बैसि जाइ छथि, आ हुनका निंघारऽ लगइ छथि।

एहि बीच भामती निन्ने मे उतान भऽ जाइ छथि।

भामती कें निघारैत-निघारैत एकटा हाथ हुनका ओहिकात राखि चुम्मा लेबऽ चाहइ छथि, कि तखने भामती करौट होइ छथि। वाचस्पति हाथ छीपइ छथि तथापि भामती कें हाथ नीक जेकाँ अभरि जाइ छनि।

भामती अकचकाइत उठिकऽ बैसि रहइ छथि। क्षणभरि गुम्म रहइ छथि।)

(मंच पर इजोत पसरैत अछि।)

भामती -कतेक लिखलियैये?

वाचस्पति -लिखब ! लिखब ! लिखब ! आहि रे लिखब !

(तमसाकऽ ठाढ़ भऽ जाइ छथि।)

...अपने कियेक ने लिखि लइ छी? चूड़ा-दहीक कौर नहि छइ जे एकेबेर मे सपेट लेब!

(भामती अप्रतीभ शून्य मे देखऽ लगइ छथि। छाती फाटि जाइ छनि।

वाचस्पति सहटिकऽ कने दूर पर ठाढ़ भऽ जाइ छथि।)

...त्रिया चरित्रं पुरुषस्य भाग्यं, दैवो न जानाति कुतो मनुष्यः !

(श्लोक पढ़ि कनडेरिये भामती दिस ताकइ छथि। श्लोक पर भामतीक नजरि हुनके दिस छनि।)

भामती - की कहलियै? कहियौ तऽ फेर एकबेर?

वाचस्पति -फेर सुनब? *(भामतीक ल`ग मे आबि)*

तऽ लिअ... अघाएल बक के पोठी तीत !

(भामती काठ भऽ जाइ छथि। वाचस्पति चुपचाप अपना ओछाएन दिस टघरि जाइ छथि। शून्य मे देखैत भामती ठाढ़ि भऽ जाइ छथि। मुँह सिन्नुर सन लाल भऽ गेल छनि। हाँइ-हाँइ नूआ खोलि लइ छथि, आ वाचस्पति दिस बढ़इ छथि।)

भामती -*(साया आ कंचुकी मे)* वेश्या नहि बनितहुँ तऽ भरण-पोषण कोना होइत?

(वाचस्पति ल`ग मे चलि अबइ छथि।)

बहु डेबबाक सामर्थ नहि रहय तऽ माय-बाप विवाह कियेक करौलनि? स`ख लेल नहि? *(वाचस्पतिक हाथ पकड़ैत)* जोरू, जाँत जोर के ! एक राति तेल-टेमीक अभाव मे अपन नुआ जराकऽ नाङट भेल रही। आहाँक काम तृप्ति लेल निर्वत्र होबऽ मे कोन लाज? आउ हे कामदेब कें भष्म करऽवला शिव-भोला।

(वाचस्पति अपन हाथ छोड़बऽ चाहइ छथि, मुदा, भामती पंजियाकऽ पकड़ि लइ छथिन।

...देखाउ, देखाउ अपन पुरुषत्व ! हमर कोखि भरऽ

चाहइ छी ने?

(वाचस्पति पूरा दम लगाकऽ अपना कें छोड़ा तऽ लइ छथि, मुदा ढेका भामतीक हाथ मे आबि जाइ छनि।)

...भागइ छी कतऽ? हम तऽ भोग्या छी ! आउ ने ! हमरा संग लाज केहेन?

(वाचस्पति ढेका छोड़एबाक प्रयास करइ छथि। भामती ठहाका मारि हँसइ छथि।)

(हँसैत-हँसैत) हम तऽ बियाहलि वेश्या छी ! हे शंकर-भाष्यक टीकाकार ! शंकराचार्य कें इएह कामशास्त्र पराजय केने रहनि ! मुदा अहाँ तऽ पारंगत छी ! अहिलौकिक बनू।

(वाचस्पति जेना-तेना भागऽ मे सफल होइ छथि, तथापि ढेकाक एकटा कोन्ह पकड़ने भामती बाहर तक जाइ छथि। नेपथ्य सँ भामतीक शब्द सुनल जाइछ।)

...भगलहुँ कतऽ? संतान नहि देब हमरा?

(बताहि जेकाँ हँसैत) भामती प्रवेश करइ छथि। ठाढ़ि भऽ हँसैत छथि आ मांथ पकड़िकऽ बैसि जाइ छथि।

...(शून्य मे देखैत) हँ, हम वेश्या छी। ई उपाधि हमरा

भेटत, से तऽ जनले छल। जेहेन डेबनाहर, तेहने ने गति भेटत ! (संगीत प्रवाहित होइछ)

(शून्य मे तकैत अति आद्र भऽ जाइ छथि। छाती फाटि जाइ छनि। मुँह झाँपि कानऽ लगइ छथि।)

आस्ते-आस्ते प्रकाशांत होइछ।

दृश्य :

(वाचस्पति अपना ओछाएन पर सूतल छथि। भामती पड़लि-पड़लि वाचस्पति दिस टुकुर-टुकुर ताकि रहलि छथि। कलबल उठिकऽ बाकस तक अबइ छथि आ बाकस मे सँ लिखलाहा गेंट लऽ छाती सँ सटा लइ छथि। पुनः गेंट कें बाकस मे राखि दइ छथिन।

पत्र आ कलम लऽ किछु लिखइ छथि, आ कलबल वाचस्पतिक सिरमा मे राखि गओं सँ बाहर भऽ जाइ छथि।

क्षणभरि बाद वाचस्पतिक निन्न टुटइ छनि। भामतीक ओछाएन रिक्त देखइ छथि, संग-संग घर'क मुँह खुजल। वाचस्पति उठिकऽ बैस जाइ छथि।)

वाचस्पति -ओह, आइ बड़ खराब स्वप्न देखल अछि ! *(घर'क*

मुँह दिस देखैत) बड़ बिलम्ब भऽ रहल छनि ! आनदिन तऽ हमरा उठाकऽ जाइ छलीहए!

(उठिकऽ मुँह तक जाइ छथि। मुरियारी दऽ बाहर देखइ छथि।)

...कोनो आहटि नहि पाबि रहल छियनि ! अतेक रातिकऽ कतऽ जा सकइ छथि !

(दोसर घर जाइ छथि। फेफिआएल सामनेक मुँह दऽ प्रवेश करइ छथि। नजरि सिरमा मे राखल पत्र पर जाइ छनि। पत्र लऽ कऽ पढ़ऽ लगइ छथि :-)

प्रिय प्राणेश,

हमरा रहने अहाँक तपस्या भंग भऽ रहल अछि। हम मेनका कि रम्भा नहि, मात्र अहाँक स्त्री बनिकऽ अतेक दिन तक यथासाध्य अहाँक सेवा कएल। ई हमर अभाग जे अहाँक विश्वास प्राप्त करऽ मे हम अक्षम रहलहुं। अहाँ सदति संतानक चर्च करैत रहइ छी। हमर संतान तऽ ई ग्रंथ अछि जे अहाँ पूर्ण करऽ जा रहल छी। कोनो-कोनो माय असह्य वेदनावश असमय काल कलवित होइत अछि। हमहूँ सएह प्रसूति छी।

मोन राखब, ग्रंथ पूर्ण कयनहि हमर श्राद्धकर्म हएत। अन्यथा हमरा शांति नहि भेट`त।

(क्षणभरि, वाचस्पति अवाक रहि भामा ! भामा! चिचिआइत बाहर होइ छथि। नेपथ्य सँ `भामा! भामा !` शब्द आस्ते-आस्ते विलिन होइत सुनल जाइछ।)

प्रकाशांत



दृश्य

(मंच पर पूर्ण प्रकाश होइछ। पूर्णतः स्नाता आ बेसुध भामती कें कोरा मे उठौने वाचस्पति प्रवेश करइ छथि। जाँघ पर भामतीक माथ राखि बियनि हौंकइ छथि।)

वाचस्पति -*(आर्द स्वर)* अहाँ तऽ देखऽ नहि अबितहुँ। हमरा कलंकक ओतेक भय नहि अछि, जतेक कि अहाँके हेरा देबाक ! अहाँके विश्वास कोना भऽ गेल जे अहाँक अभाव मे ग्रंथ पूर्ण भऽ जाएत? आ हम स्वयं जीवित रहब?

(भामती आँखि खोलइ छथि।)

....हम साक्षात् भगवती कें नहि चीन्हि सकलहुँ! अहाँसन साधना के कऽ सकत? आबवला समय

अहाँक तपस्या आ त्याग कें असाधरण कल्पना, अतिशयोक्ति मनगढ़ू पिहानी कहि उड़ा देतइ। मुदा, अहाँक ग्रंथ *(भामती आँखि मूनि लइ छथि)*. ..हँ हँ, अहाँक ग्रंथ अकाट्य प्रमाण स्वरूप रहतइ। लोक तहन मानऽ लेल बाध्य भऽ जाएत जे मिथिला मे मात्र सीता नहि, भामती सन नारि सेहो भेल छलीह !

(भामती पुनः आँखि खोलइ छथि आ उठबाक प्रयास करइ छथि। वाचस्पतिक सहायता सँ उठिकऽ बैसइ छथि।).

... हम एहि टीकाक नाओ `**भामती**` राखि रहल छी। आह्, कतेक उपयुक्त नाओं भेलैक, नहि? *(उठिकऽ)* आब हमरा आज्ञा दीअ जे जल्दी हम अहाँक वस्तु अहाँकें दऽ सकी। हमरो तखने शांति भेटत आब !

(वाचस्पति अपना बैसार दिस जाइ छथि। भामती टुकुर-टुकुर ओमहर देखैत उत्फुल्ल भऽ उठइ छथि। सुखक नोर टघरऽ लगइ छनि।)

आस्ते-आस्ते पर्दा ससरऽ लगैछ।

